❋ पंचम अध्याय ❋

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

✳ पंचम अध्याय ✳

'कितने पाकिस्तान उपन्यास में चित्रित समस्याएँ '

5.1 समस्या एंव अर्थ

5.2 समस्या के प्रकार

5.2.1 सामाजिक समस्या

5.3.1.1 व्यसनाधिनता

5.2.1.2 नारी शोषण

5.2.1.3 अनमेल विवाह

5.2.1.4 संयुक्त परिवार

5.2.1.5 परित्यक्त्या नारी की समस्या

5.2.1.6 अंतर्जातीय विवाह की समस्या

5.2.1.7 विधवा नारी की समस्या

5.2.1.8 बलात्कारी नारी की समस्या

5.2.1.9 मकान की समस्या

5.2.1.10 अन्य समस्याएँ

5.2.2 राजनीतिक समस्याएँ

5.2.2.1 आतंकवाद

5.2.2.2 नेताओं की स्वार्थीवृत्ति

5.2.2.3 अलगाववाद

5.2.2.3.1 गलत नेतृत्त्व

5.2.2.3.2 भ्रामक प्रचार

5.2.2.4 विभाजन की समस्या

5.2.2.5 शरणार्थियों की समस्या

5.2.2.6 रियासतों की समस्या

5.2.2.7 उत्तराधिकार की समस्या

5.2.2.8 गृहयुद्ध की समस्या

5.2.3 आर्थिक समस्या

5.2.3 उच्च वर्ग

5.2.3.2 मध्यवर्ग

5.2.3.3 निम्नवर्ग

5.2.3.4 ब्रिटिश शासन पूर्व भारत की आर्थिक स्थिति

5.2.3.5 ब्रिटिशों की व्यापार नीति

5.2.3.6 धन की अतिरिक्त लालसा

5.2.3.7 गुलामों का व्यापार

5.2.3.8 जमीन की पैदावार

5.2.3.9 आर्थिक शोषण तथा विषमता

5.2.3.10 गरीबी

5.2.4 धार्मिक समस्या

5.2.4.1 जाति तथा वर्गभेद की समस्या

5.2.4.2 ब्राह्मण वाद

5.2.4.3 वर्णवाद

5.2.4.4 ईसाई धर्म का प्रचार

5.2.4.4 धार्मिक कठोरता

5.2.4.5 धर्मांतरण

5.2.4.6 रूढ़ि परंपरा

5.2.5 साहित्यिक समस्या

5.2.5.1 राजाश्रित इतिहासकार

5.2.5.2 अंग्रेजी साहित्यिक

5.2.6 वैज्ञानिक समस्या

निष्कर्ष

सदंर्भ सूची

✳ पंचम अध्याय ✳

'कितने पाकिस्तान उपन्यास में चित्रित समस्याएँ '

प्रस्तावना

5.1 समस्या : अर्थ एवं स्वरूप

मानव आज जिस युग से गुजर रहा है उसे कोई भी संज्ञा दी जाए वह बुद्धि की दौड़ से परे है, फिर भी वह गहन चिंतन और मनन से इसी निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि, इसे विज्ञान आदि की अपेक्षा 'समस्या युग' कहना अधिक उचित होगा। मानव अपनी बुद्धि का विस्तृत साम्राज्य फैला चुका है। उसने अनगिनत एवं अपरिचित रहस्यों को खोजने की कोशिश की है फिर भी बुद्धिमान मानव को 'समस्या' जैसे छोटे शब्द ने बाँध लिया है। 'समस्या' का कठोर धारा एवं सुदृढ प्रचिरों को तोड़कर वह एक पग भी बाहर निकाल नहीं पा रहा है। आखिर निकले भी कैसे, जीवन का कोई भी ऐसा कोना नहीं जहाँ आज समस्याओं का स्वेच्छाचारी शासन न हो।

कुछ विद्वानो ने शब्दकोशों के अतंर्गत समस्या का निम्न प्रकार से अर्थ किया है -

चित्रकाव्य के सात भेदों में से 'समस्या' एक भेद है। इसका लक्षण निरूपित करते हुए पुराणकारों ने कहा है कि - "सुशिलष्ट पयमें कं यन्तानाश्लोको शवि निर्मितम सा समस्या परस्या . . . व्यवस्थों : कृति संकरात।"[1]

संस्कृत आचार्यों ने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है कि "समस्या" वह है जिसमें अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो किन्तु आधुनिक युग में समस्या का स्वरूप परिवर्तित होता गया और अब इसका अर्थ केवल कठिन वस्तु से लिया गया प्रतीत होता है। इसके साथ ही किसी भी कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर संभव एवं असंभव सभी प्रकार के व्यापार के माध्यम से देना भी लक्ष्य रहा है।

डॉ. विमल भास्कर कहते हैं कि "समस्या आज कठिन उलझन के सिवाय और कुछ नहीं पर मानव इस उलझन की सुलझन में इस तरह उलझ गया है कि सुलझन को पाने

के लिए हाथ-पाँव हिलाने पर भी इसके हाथ में उलझन के सिवाय कुछ भी नहीं आ रहा है। जीवन की जटिलताएँ, कठिनाइयाँ और समस्याएँ उसकी चित्ता वृत्तियों के विकास के साथ-साथ निरन्तर बढ़ती चली जा रही है। मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है। यही अतृप्ति कालान्तर में जीवन में समस्याओं का जाल फैला देती है। आज के युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ़ गयी है कि उनके कारण जीवन स्वंय एक समस्या हो गया है।"[2] हर युग की अपनी समस्या होती है युगानुरूप समस्या तथा उनका स्वरूप भी बदलता रहता है। हिंदी विश्वकोश में "समस्या" शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है- "समस्या (स. स्त्री) समसतं उत्ल्का संक्षेपण सम असप्यत।"

1. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पुरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है। पर्याय-समासाथी -समास्यार्था-समाप्तार्था (भरत)

2. संघटन, 3. मिश्रण मिलाने की क्रिया, 4. प्रसंगी।"[3]

'शब्दकल्पद्रुम' में भी "समस्या स्त्री -समसनं उक्त्या संक्षेपणम् सम् + अस्+ण्यत्।"[4] ऐसा विग्रह दिया है। और लगभग उपयुक्त अर्थ ही दिया है।

'मानक हिंदी कोश' में "समस्या" शब्द का विस्तार से अर्थ दिया है। "समस्या - वि. (समस् (होना) + ण्यत्-क्यवूवा)

1. जो किसी के साथ मिलाया जा सके या मिलाया जाने का हो।

   समस्यमान - वि. (सं.) (व्याकरण में वह पद) जो किसी दूसरे प के साथ मिलकर समस्त पद बनाता हो या बना सकता हो।

   समस्या - स्त्री (सं. समस्य -टाप्)

1. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन।

2. मिश्रण। संघटन।

3. उलझनेवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या विकट प्रंसग (प्रॉब्लेम)

4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्यरचना कौशल्य की परीक्षा करने के लिए ऐसे उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छंद या श्लोक प्रस्तुत करे।"[5]

'समस्या' शब्द का लगभग उपर्युक्त दिया हुआ अर्थ हिंदी शब्द सागर, संक्षिप्त हिंदी, शब्द सागर, नालंदा विशाल शब्द सागर आदि भाषा शब्दकोशों में दिया है। इस दृष्टि से देखा जाए तो जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ होती हैं, जिनका मुकाबला रोजमर्रा की जिंदगी में मनुष्य को करना पड़ता है। कमलेश्वर ने 'कितने पाकि स्तान' उपन्यास में ऐसे अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। जिसे विवेचन, विश्लेषण करना उचित होंगा।

5.2 समस्या प्रकार

कमलेश्वर कहानीकार और उपन्यासकार कें रूप में काफी चर्चित रहे हैं। उन्होंने अपने युग के सत्य को अपने साहित्य द्वारा उजागर किया है। उनका अंदाज-ए-बयान कुछ अलग किस्म का रहा है। जीवन की तमाम अच्छाइयों और बुराइयों का लेखा - जोखा उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है। कमलेश्वर के जीवन की यात्रा कस्बा मैनपुरी से शुरू हुई और इलाहाबाद, बबंई से होकर अब दिल्ली में टिकी हुई है, इस जीवन यात्रा के दौरान उन्होने कस्बाई, महानगरीय आदि समस्याओं को झेला है। एक साहित्यिक होने के कारण सामाजिक समस्याओं चित्रण किया है। साथ में साहित्यिक समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला हैं। वे समस्याएँ इस प्रकार हैं :-

समस्याओं के प्रकार निम्नरूप से हैं -

सामाजिक समस्याएँ

राजनीतिक समस्याएँ

आर्थिक समस्याएँ

धार्मिक समस्याएँ

साहित्यिक समस्याएँ

वैज्ञानिक समस्याएँ

5.2.1 सामाजिक समस्याएँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव कभी-भी अकेला नहीं रह सकता। वह हर दम समूह के साथ रहना पसंद करता है। समूह में रहते हुए मनुष्य को अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है। इस कारण साहित्य में मानव जीवन की विविध क्रियाकलापों के दर्शन होते हैं। डॉ. विमल भास्कर कहते हैं - "आज उपन्यास में समाज की प्रगति का हर पहलू प्रतिबिंबित होता है। अभिजात या सामजिक समाज का विघटन और आधुनिक युग का आरंभ आधुनिक युग के आंतरिक संघर्ष की बढ़ती हुई तीव्रता और पूँजीवाद के विकास से संयुक्त प्रथा के ह्रास सभी का प्रतिनिधित्व उपन्यास में मिलेगा, यही नहीं अब मनोरंजन को छोड़कर वे वास्तविक जगत मे आ गये हैं। यहाँ मानव के रूदन या क्रंदन से वे बचकर नहीं निकल सकते। समाज के भीतर वर्ग और वर्ग संघर्ष फिर वर्ग के भीतर कुल में परिवार और परिवार का अंततोगत्वा परिवार के भीतर व्यक्ति और व्यक्ति का संघर्ष इन पर उपन्यासकार की दृष्टि विकसीत होती है, जिससे उपन्यास में सामाजिक वस्तुओं का अनुपात बढ़ता गया।"[6]

समाज में व्यक्तियों की मूलभूत आवश्यकताएँ बढती हैं। सामाजिक संस्था तथा संस्कृति उसे पूर्ण करने में असमर्थ या असफल हो जाती है। तब जो स्थिति पैदा होती है उसे ही सामाजिक समस्या कहा जाता है। समाज में आये हुए परिवर्तन और

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उसकी प्रक्रिया से निर्माण हुए सामाजिक विघटन के परिणामों के कारण ही विविध सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है -

5.3.1.1 व्यसनाधिनता एक समस्या

प्राचीन काल में मद्‌यपान अथवा औषधियों का प्रयोग राजा-महाराजा एंव आर्य भी करते थे। आधुनिक युग में यह फैशन तथा स्वागत -सत्कार का साधन बन गया। सभी देशों की सरकार इसे आय के स्त्रोत के रूप में स्वीकार कर रही हैं। सामाजिक दृष्टि से यह एक बिकट समस्या है। मादक प्रवार्थों के सेवन से सामाजिक विघटन 'विपथगामी व्यवहार' उत्पन्न होता है। शराब अथवा नशिली दवायें व्यक्ति विशेष के लिए हानिकारक ही है तो इससे परिवार एवं समाज को भी विघटित करती है। भारत में यह समस्या आठवी सदी में सोमरस के रूप में, 16 सदी में मुगलों के शौक के रूप में तथा वर्तमान में एक दु साध्य समस्या के रूप में उभरकर आई है।

कितने पाकिस्तान उपन्यास के अंतर्गत कमलेश्वर ने व्यसनाधिनता इस समस्या पर प्रकाश डाला है। हिंदुस्तान में पैर जमाने के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजियों ने चीन के साथ व्यापार सबंध बढ़ाये। " ये समुद्री लुटेरे हैं जो कलकत्ता के अफिम के कारखानों से अपने स्टीमरों में अ अफीम की पेटियाँ लेकर मकाओ द्वीप की खाडियों में छिप जाते हैं। वही से वांगसिया या कुआँचा के जरिए ये लुटेरे अफीम की तस्करी करते हैं।"[7]

चीन के राजवंश में अफीम की आयात दवाइयों के लिए की जाती थी। वह भी साल भर 200 पेटियाँ। लेकिन ब्रिटेन सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी को इस अवैध व्यापार के लिए खुली छूट दे दी है। फिर वे चीन में 200 नहीं 2000 पेटियाँ का धंधा करते हैं। क्योंकि चीन में अफीम का नशा कुलीनता और बड़ी ओहदेदारी का प्रतीक बन चुका था। इस तरह की व्यसनाधिनता का वर्णन करते हुए कमलेश्वर ने लिखा है कि " प्राचीन की एक बडी सभ्यता अफीम की अर्थ-बेहोशी में डूबी हुई थी। उनकी आँखों और नाक से काला धुआँ निकल रहा था। पर्ल नदी की धार काली पड़ गयी थी। शंघाई, कैन्टन, नानकिंग अमोय, फूचो, निंगपो बंदरगाहों की सड़कों और गलियों में करोडों लोग चल फिर

रहे थे, लेकिन उनकी छायाएँ नहीं थी . . . वे एक दूसरे से पूछ रहे थे - हम किस शहर में है ? हम कहाँ हैं ? . .।"[8]

अफीम के साथ-साथ 'शराब' की नशा पर भी कमलेश्वर ने प्रकाश डाला है। मॉडेल जेसिका लाल बहुत ही खूबसूरत और दिलकश थी। उसकी खूबसूरती का राज बताते हुए बीना रमानी ने कहा - "यह हमारी नाचती -गाती कल्चर की पहली शहीद है . . पैदा होने के बाद इसने माँ का दूध जरूर पिया था। फिर नहीं पिया। यह लगातार लिकर या बीयर पीती रही। क्योंकि दूध से ज्यादा प्रोटिन है बीयर में। सेब के रस से कम कैलेरीज है बीयर में।"[9]

व्यसनाधिनता के कारण मानसिक व बौद्धिक रोग, शारीरिक क्षीणता, दुर्घटना, गरीबी, पारिवारिक समस्या आदि बढ़ सकते हैं। कमलेश्वर ने व्यसनाधिनता को समाज के लिए एक शाप बताकर समस्या पर को चित्रित किया है।

5.3.1.2 नारी शोषण एक समस्या

संसार रूपी रथ के दोनो पहियों में से एक महत्त्वपूर्ण पहियों नारी है। लेकिन प्राचीन काल से नारी का शोषण ही किया गया है। आर्यों ने नारी को क्षुद्र मानकर उसकी शोषित दास्तान की शुरूआत कर दी। आगे राजा महाराजाओं ने नारी को भोगवस्तु मानकर उसके लिए युद्ध किये। मतलब औरत को हमेशा पुरूष की संपत्ति माना गया।

भारत -पाकिस्तान विभाजन के दौरान औरतों का शोषण हुआ, ऐसा शोषण शायदं पहले कभी भी नहीं हुआ था और बाद में भी नहीं होगा। विभाजन में सांप्रदायिक दंगों में हर दिन हजारों जगह लुटमार, बलात्कार की घटनाएँ घटती थी। हिंदू-मुस्लिम एक -दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे। मजहब के नाम पर औरतों की इज्जत लूटी जाती थी उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' के अंतर्गत कमलेश्वर ने नारी शोषण समस्या का चित्रण करते हुए लिखा है कि " एकाएक उन्हें यह घर भी मिल गया। एक औरतवाला घर। मुल्की अफसर ने अपने सिपाहियों को अनुशासन में रखतें हुए बाहर जाने का हुक्म दिया और उस औरत के साथ वही सब कुछ किया और उसके बाद उसके फौजियों

ने भी उसके साथ वही कुछ किया जो दुश्मन फौज के पराजित अफसर और उसके सिपाही उसके साथ करके भागे गए थे।"[10]

विभाजन के दौरान औरतों पर जुल्म डहाए गए। उनके गहने छिन लिए गए। दोनों मुल्क की औरतों ने मानो मानसिक तैयारी की थी क्योंकि वे जानती थी कि धर्मांध लोग पहले उसके गहने छिन लेंगे और बाद में उनकी इज्जत। ऐसी ही स्थिति में निकली सुरजीत कौर का उदाहरण कमलेश्वर ने दिया है " विभाजन में सुरजीत कौर ने अपने मासूम बेटे को अफीम चटा कर मुलतान के अपने पुश्तैनी घर से निकली थी . . . उसने शृंगार किया था। सारे गहने पहने थे। वह जानती थी कि सबसे पहले दंगाई उसके गहने लुटेंगे, बेटा बच जायेगा। उसके बाद गहने नहीं होगे तो इज्जत लूटी लाएगी, पर बेटा बच जायेगा और शायद तब तक वह नए बने मुल्क पाकिस्तान की सरहद पार कर लेगी और अपने बेटे को बचा सकेगी।"[11]

इसी तरह नारी की मानसिक कुंडा तथा शारीरिक शोषण का चित्रण उपन्यास में किया है।

5.3.1.3 अनमेल विवाह की समस्या

अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण प्रेमचंद युग से साहित्यकारों ने किया है। पर हर युग में इस समस्या से निर्माण की स्थिति में अंतर दिखाई देता है। बाल-विवाह तथा दहेज-प्रथा का प्रतिफलन अनमेल विवाह है। उम्र की असमानता के कारण अनमेल विवाह के कारण पति-पत्नी के सबंधों में मानसिक और शारीरिक दोनो स्तरों पर वैषम्य निर्माण हो जाता है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने अनमेल विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला है। उपरोल्लेखित कारणों के साथ भारत-पाकिस्तान विभाजन के कारण भी अनमेल विवाह हुए हैं इस बात पर भी प्रकाश डाला है। विवाह के पश्चात् उन औरतों की मानसिक घुटन, शारीरिक शोषण आदि पर कमलेश्वर ने अपनी कलम चलायी है। जैसे कि बिलकीस, जिसकी शादी एक अरब से हुई थी, जो उम्र में बिलकीस से 28 बरस बड़ा था। उसने हर दिन बीसियों बार बिलकीस को कुदरती- गैरंकुदरती हरकतों का शिकार

बनाया था। उसका शारीरिक शोषण किया। और उससे पैदा हुए बच्चे को 'तेली बच्चा' समझकर अरब समाज से दूर रखा गया।

उसी प्रकार पच्चास-पचपन साल के बुटासिंह और जेनिब की शादी भी अनमेल विवाह के अंतर्गत आती है। ऐसे विवाहों में दोनों की एक -दूसरे से बनती नहीं या तो विच्छेद निर्माण होती है। जिस का अंत दु:खत होता है।

इस तरह कमलेश्वर ने अनमेल विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला है।

5.3.1.4 संयुक्त परिवार की समस्या

भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है। आज वैज्ञानिक युग में बढ़ती हुई आबादी के कारण संयुक्त परिवारों में विघटन हो रहा है। रोजी रोटी के लिए लोग परिवार से अलग हो जाते हैं। सयुंक्त परिवार में 'आमदनी कम और खर्चा ज्यादा' ऐसी स्थिति रहती है।

कमलेश्वर ने कितने पाकिस्तान उपन्यास में संयुक्त परिवार की समस्या को चित्रित किया है।

भारत यह कृषि प्रधान देश है। मगर राजस्थान के रेगिस्तान में कैसी खेती। जहाँ वर्षाऋतू में भी पानी की समस्या रहती है। विभाजन के पूर्व भी यह समस्या राजस्थान में थी। खेती नें पैदावार बहुत कम थी। बुटासिंह के भाई-भौजाई ने पच्चास-पचपन साल तक बुटासिंह की शादी नहीं की, क्योंकि शादी के बाद खानेवालों की संख्या बढ़ जाती है। खेती से पैदा होनेवाले अनाज में उनका गुजर बसर किसी तरह से होता है। संयुक्त परिवार होने के कारण बुटासिंह के भाई-भौजाई स्वार्थी बन गए थे। बुटासिंह की शादी करके वे खेतों का बँटवारा न हीं चाहते थे,और नही गरीबी बढ़ाना।

5.3.1.5 परित्यक्त्या नारी

परित्यक्ता मूल संस्कृत शब्द है जिसका आशय पति द्‌वारा त्यागी या छोड़ी हुई नारी है। अर्थात विवाह के पश्चात् पति अपनी पत्नी का त्याग करता है तब पति द्‌वारा त्यागी हुई स्त्री को परित्यक्ता नारी कहा जाता है।

उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने इस समस्या को चित्रित किया है । इसीलिए उन्होंने वैदिक युग के ऋषि गौतम और उनकी पत्नी आहिल्या का उदाहरण दिया है।

ऋषि गौतम की पत्नी आहिल्या अपूर्व सुंदरी थी। अप्सराओं से भी बढ़कर थी। वैदिक देवता इंद्र उस पर आसक्त हो गया उसने गौतम ऋषि का वेष धारण करके आहिल्या के साथ संभोग किया। ऋषि गौतम ने इस अपराध के लिए इंद्र को शाप दे दिया। और अपनी पत्नी आहिल्या को भी क्रोधित होकर शाप देते हैं - " तू कैसी पतिव्रता पत्नी है . . तुझे किसी के कपट का पता नहीं चला . . . तू पर -पुरूष और अपने पति का भेद नहीं जान पाई। रूपगर्विता हृदय हीना। जा . . . पत्थर की शिला बन जा।"[12]

इसी तरह निर्दोष होते हुए भी आहिल्या को गौतम ऋषि ने त्याग दिया। समाज में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। इसीलिए कमलेश्वर ने इस समस्या को चित्रित किया है।

5.2.1.6 अतंर्जातिय विवाह

प्राचीन काल से अंतर्जातीय विवाह की परंपरा चली आ रही है। प्राचीन राजाओं के तीन-तीन चार-चार विवाह के उदाहरण मिलते है । ब्राह्मण ग्रंथों में राजा की तीन पत्नियों का उल्लेख है, जिन्हें क्रमशः महिषी, वावाता, परिवृक्ता कहा गया है, जो तीन विभिन्न जातियों से क्षत्रिय वैश्य और शुद्र से सबंधित है।

"अंतर्जातीय विवाह के दो प्रकार बताये गए हैं।

1. अनुलोम।
2. प्रतिलोम।

अनुलोम :- अर्थात उच्च जाति के पुरूष का निम्न जाति की स्त्री से विवाह करना।

प्रतिलोम :- अर्थात उच्च जाति की स्त्री का निम्न जाति के पुरूष से विवाह करना।

आज के प्रगत समाज में अंतर्जातीय विवाह को मान्यता दी गयी है। तथा शासन द्वारा ऐसे विवाह भी वैद्य बनये जाते हैं। फिर भी ऐसे विवाह को परिवार विश्व धर्मांध समाज कबुल नहीं करते और अतंर्जातीय विवाह एक समस्या बन जाती है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास के अंतर्गत कमलेश्वर ने अतर्जातीय विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला है।

भारत-पाकिस्तान विभाजन के दौरान अगवा करली गयी जेनिब की इज्जत सीख बुटासिंह बचाता है। जेनिब को अपने घर से लाकर गाँव के मुखियाँ के कहने पर उससे शादी करता है। किन्तु शादी के बाद एक फर्मान के तहत अगवा कर ली गयी औरतों को तलाशा गया। जिनमें जेनिब भी थी। तलाशी दस्ते ने जेनीब को पाकिस्तानी शरणार्थी कैम्प में रखा। वहाँ से जेनिब को पाकिस्तान में उसके घरवालों को सपूर्द किया। जेनिब के लिए बुटासिंह मुसलमान बना। मगर उसका मुसलमानत्व जेनिब के घरवालों ने नामंजूर किया और जेनिब को अदालत में गवाही देने नहीं दी। अदालत में मुकदमा हार जाने के बाद बुटासिंह ने आत्महत्या कर ली। यह अंतर्जातीय विवाह की एक समस्या ही है। यदि बुटासिंह पहले से ही मुसलमान होता तो यह विरहानुभूति जेनिब तथा बुटासिंह को भी सहनी नहीं पड़ती।

5.2.1.7 विधवा नारी की समस्या

भारतीय समाज में किसी भी काल में विधवा की स्थिति संतोषजनक नहीं रही है। भारतीय मानस में यह धारणा घर कर बैठी थी कि स्त्री का विवाह संस्कार जीवन में एकबार ही होता है। पति की मृत्यु के बाद पत्नी की आयु कितनी भी क्यों न हो उसे फिर से विवाह करने की अनुमति भारतीय समाज में नहीं दी गई थी।

परंतु आज की स्थिति पहले से बेहतर है। समाज सुधारकों संस्थाओं और कानून द्वारा विधवा -स्त्री के परंपरागत रूप में काफी परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। आज अगर विधवा नारी नए सिरे से जीवन शुरू करना चाहे तो उसे अनेक कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता। कानून ने विधवा को पुनर्विवाह का अधिकार दिया है परंतु उसका प्रत्यक्ष अंमल कम मात्रा में दिखाई देता है। स्वयं विधवाएँ भी परंपरागत रूढ़ियों के

दायरे तोड़ने के लिए तैयार नहीं है। और अगर कोई इन दायरों को तोड़ना चाहे तो धर्मांध लोग ऐसा करने से रोकते हैं। 'कितने पाकिस्तान' में विधवा समस्या का चित्रण किया है। साथ में समाज ही विधवा का क्या स्थान है ? इस पर भी प्रकाश डाला है।

सलमा जो कि सलमान हुसेन की बेवा थी। सलमान की मौत के बाद उनके घरवालों ने सलमा को सलमान की कमाई की दो तिहाई जायदाद की विरासत से बेदखल कर दिया। एक झूठी विल बनाकर सारी जायदाद हडप ली। सलमा कहती है कि "खानदानवालों ने मुझे अदालत में घसीटा था . . . और सलमान की मौत का इल्जाम मुझ पर लगाया था और दलील यह दी थी कि शादी से पहले मेरा रिश्ता किसी और आदमी से था।"[13] मतलब संपत्ति के खातीर परिवारवालों ने सलमा से मुँह फेर लिया तो समाज की बात तो बहुत दूर। अदालत में दी हुई दलील समाजवालों ने सच मानकर इतना कहा कि इतनी खूबसूरत औरत का हकदार एक आदमी हो और वह लगातार हकदार बना रहे, नामुमकिन है।

आगे जब सलमा के जीवन में अदीब आया तो फिर 'धर्म' उनके मार्ग का रोड़ा बन गया। हिंदु मर्द के साथ मुसलमान औरत नहीं रह सकती। सलमा कहती है कि "अपनी मर्जी का मालिक कोई भी मर्द आजाद हो सकता है पर औरत को आप कुनबे की जायदाद समझते हैं। . . . औरत को पहले कुनबे में घेर कर रखना चाहतें हैं, फिर खानदान का वास्ता देते हैं, और जब कुछ भी कारगर नहीं होता तो मजहब का वास्ता देते हैं।"[14]

अर्थात मजहब में कुछ ऐसे घटिया और कमीने लोग मौजूद हैं जो अपनी जिस्मानी हवस के लिए मजहब का इस्तेमाल करते हैं।

इसी तरह विधवा नारी चाहकर भी किसी दूसरे आदमी से रिश्ता नहीं रख सकती। यदि रखती भी है तो उसे काफी तकलीफों का सामना करना पड़ता है।

5.2.1.9 बलात्कारी नारी की समस्या

प्राचीन काल से नारी को भोग की वस्तु माना गया है। समाज उनकी ओर एक अबला के रूप में देखता है। नारी को अपनी इज्जत जान से भी ज्यादा प्यारी होती है। इतिहास में 'जौहर' की रस्म इसी बात का सबूत है कि औरत अपनी जान दे देंगी

पर अपनी इज्जत पर दाग लगने नहीं देगी। फिर भी आज समाज में इतने मनोविकृत कामांध हैं जो औरत के अबलापन का फायदा उठाते हुए अपनी इंच्छापुर्ति के लिए उस पर बलात्कार करते हैं।

यह सच है कि औरत की इज्जत ही संस्कृति के मयारों को तय करती है जो संस्कृति औरत की आबरू हो इज्जत नहीं दे सकी वह रोम यूनान और मिस्त्र की तरह मिट गयी। हिंदुस्तान में जब उसकी संस्कृति औरत की आबरू की रक्षा नहीं कर सकी तो औरतों ने अपनी सभ्यता की रक्षा के खातिर अपना बलिदान देकर संस्कृति का मुँह उजला किया है।

उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने बलात्कारी नारी की समस्या पर प्रकाश डाला है। वे यह भी कहते हैं कि इस जालिम दौर में औरत अपनी आबरू की हिफाजत के लिए विद्रोह करती है। उत्तराधिकार का युद्ध हार जाने के बाद दाराशिकोह अपने परिवार और वफादार सैनिकों के साथ इरान के शासक शाह अब्बास की पनाह में जाना चाहता है। लेकिन नादिरा बानू ने विद्रोह कर दिया। वह कहती है कि " हम अपने वतन की सरजमीं पर बेमौत मर जाएँगी, लेकिन ईरान के शाह अब्बास के हरम में शामिल होकर हम उसकी वहशत का शिकार नहीं बनेंगी। हम यहीं अपने मुल्क की राजपूती वीरांगनाओं की तरह जौहर का रस्म अदा करेंगी और खुद को खत्म कर लेंगी।"[17] इसी तरह औरतों ने ही संस्कृति का मुँह उज्ज्वल किया है।

द्वितीय महायुद्ध के दौराने औरतों पर बहुत जुल्म किये गये और अन्यायग्रस्त औरतों की जिंदगी मौत से बदतर हो गयी। ऐसी ही बदतर जिंदगी जीने वाली किम-हकसुन ने कहा "मैं कोरियिन हूँ। जब मैं 17 साल की थी। . . . लेकिन 1941 में मुझे पेइचिंग से जापानी फौजियों ने उठाया था और दूसरे महायुद्ध के दौरान मुझसे जापानी सोल्जरों ने लगातार 15 बार प्रतिदिन बलात्कार किया था। मुझे 'तीसहिनताई' कोर में भर्ती किया गया जो सैक्स-कोर थी। इस कोर में करीब चालीस हजार औरतें-लड़कियाँ भरती की गई थी।"[18] ये घटनाएँ औरतों पर ढहाए गए कहर पर प्रकाश डालती है। युद्धों

के दरम्यान औरतों का इस्तमाल किस प्रकार किया जाता है इस यथार्थ को उजागर में कमलेश्वर सफल बन गए हैं।

5.2.1.9 मकान की समस्या

वर्तमान समाज तीन वर्गों में बँट गया है। उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग इन तीनों वर्गो में से उच्चवर्ग सुखपूर्ण जीवनयापन करता है किंतु मध्यवर्ग और निम्नवर्ग हजारों समस्याओं को झेलना पडता हैं। गरीबी से तंग आकर ये शहरों की तरफ दौड़ रहे हैं। लेकिन शहरों में भी उनकी समस्याएँ कम नहीं होती बल्कि और भी बढ जाती है। उन्हें सबसे पहले मकान की समस्या का सामना करना पड़ता है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने इस समस्या का चित्रण किया है। आज शहरों में बनती हुई बिल्डींगों की स्थिति का चित्रण करते हुए कमलेश्वर कहते हैं "पहले घर छोटे हुआ करते थे। पेड़ बड़े . . . घरों पर पेड़ों की छाया हुआ करती थी। अब इमारतें बड़ी और पेड़ बहुत छोटे। अब इमारतों की छाया में पेड़ों ने रहना सीख लिया हैं।"[15]

बड़ी-बड़ी इमारतें बनानेवाले लोग सामान्य लोगों को उनको जगह बेचने के लिए तंग करते हैं। उन्हें डराते धमकाते हैं। कभी मुँह मांगा दाम देने का लालच दिखाते है। किन्तु कुछ ऐसे लोग रहते है जिन्हे उस जगह से जान से ज्यादा प्यार होता है, वे किसी भी हालत में जगह बेचने को तैयार नहीं होते। जैसे कि बड़ी बड़ी इमारतों के बीच कौशल्या की झोपड़ी नुमा कोठरी है। वह कहती है, ". . जो भी हमारी कोठरी देखता है, खरीदने की बात करने लगता है। मुँह मांगा दाम देने को तैयार हो जाता है . . . पर हम सबको कह दिया है हमारी कोठरी बिकाऊ नाहीं है। एक बड़की गाडी में बहुत बड़ा ठेकेदार आया। उसका लोग फीता लेके पैमाइश करने लगा. . . दूसरे दिन उसका गुंड़ा लोग आया। हमको बेदखल करने की धमकी दिया।"[16] फिर भी कौशल्याने कोठरी नहीं बेची। क्योंकि उसका बेटा ननकू जब फौज से लौटेगा और जब उसे कोठरी दिखाई नहीं देगी तो वह कौशल्या को कहाँ ढूँढेगा।

इसी के साथ-साथ कमलेश्वर ने विभाजन के दौरान लोगों (शरणार्थी) के सामने खड़ी मकान समस्या पर प्रकाश डाला है। विभाजन के दौरान मुसलमानों के कुछ ऐसे धर्मांध लोग थे जो अनपढ़ मुसलमानों को फुसलाकर पाकिस्तान जाने के लिए कह रहे थे। लेकिन अपने घर से 'मक्का' से भी ज्यादा प्यार करनेवाला मुसलमान तन्नू कहता है कि "खुदा को अगर अपने घर से प्यार है तो क्या वह मआज - अल्लाह यह नहीं समझ सकता कि हमें भी अपने घर से उतना ही प्यार हो सकता हैं।"[17]

मकान की समस्या पाकिस्तान जाने वाले सैय्यद सिराज के परिवार को भी थी यह इतना मुश्किल दौर था कि कहीं किसी का घर नहीं था सब बेघर हो गये थे। पाकिस्तान जानेवालों को भी यह पता नहीं था कि पाकिस्तान में उनका घर कहाँ है ?

इसी तरह कमलेश्वरने उपन्यास में मकान अर्थात निवास की समस्यापर प्रकाश डाला है।

5.2.1.10 अन्य समस्याएँ

उपरोलिखित समस्याएँ के साथ-साथ 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अन्य बहुतसी समस्याएँ चित्रित हुई हैं जैसे - बहुविवाह की समस्या, विवाहेत्तर यौन सबंध, सुंदरता की समस्या, परिवार विघटन की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या आदि। समस्याओंका चित्रण करते हुए कमलेश्वर ने पुरूष की अपेक्षा ज्यादात्तर नारी की पीड़ा को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। इस तरह 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में लेखक ने सामाजिक समस्याओं का चित्रण करने में सफलता प्राप्त की है।

5.2.2 राजनीतिक समस्याएँ

राजनीति और समाज का घनिष्ठ संबंध रहा है। राजनीति समाज का अविभाज्य घटक होने के कारण दोनों को अलग करना कठिन कार्य होगा। आधुनिक युग में राजनीति के कारण आम जनता को दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती हैं। राजनीति राह का रोड़ा बनकर जनता में बाधा बन गयी हैं, जिससे अनेक समस्याओं का, मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। कृष्णकुमार बिस्सा द्वारा प्रस्तुत अरस्तु के विचार दृष्टव्य हैं - "अरस्तु के अनुसार मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है और हम जिस युग में रह रहे हैं वह राजनीतिक युग है। हमारे दैनिक जीवन में राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बात से

लगाया जा सकता हैं कि विज्ञान, साहित्य,धर्म, उद्योग, नीति, कूटनीति आदि क्षेत्रों तथा व्यक्ति, परिवार समाज, राष्ट्र तथा विश्वजनीन संबंधों में राजनीति की पेर हो गयी हैं।"[19] 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने निम्न लिखित राजनीतिक समस्याओंका चित्रण किया है।

5.2.2.1 आतंकवाद

आज के दौर में आतंकवाद अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गयी है। विश्वस्तर पर आतंकवाद पहले भी था और आज भी है। पहले हिटलर, स्टालिन, माओ, मुसोलिनी, आदि को आतंकवादी प्रवर्तक माना जाता था। वैसे आतंकवाद के अनेक शब्दार्थ हैं जैसे कि उग्रवादी,विद्रोही, क्रांति, छापामार युद्ध आंतरिक युद्ध आदि। हिंसा को भी आतंकवाद के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। साधारणत: आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है - " आतंकवाद एक उग्र हिंसा या हिंसा की धमकी देना है। इस उग्र हिंसा के लिए निर्धारित प्रक्रिया से लड़ाई लड़ी जाती है। लड़नेवालों का मुख्य उद्देश्य विरोधी के मन मे डर पैदा करना होता है, भय उत्पन्न करने की हिंसक कार्यवाही आतंकवाद कहलाता है।"[20]

भारत में यह समस्या स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्पन्न हुई है। गत वर्षों में यह समस्या आत्याधिक जटिल हो गयी है। पंजाब में खलिस्तान की माँग से पैदा आतंकवाद से अन्य कई विद्रोह पैदा हो गए। इससे यह समस्या राष्ट्रीय स्तर पर उभरकर आई है। आज भारत के चारों ओर आतंकवाद का बोलबाला है जिसमें उत्तर में पाकिस्तान द्वारा प्रोत्साहित आतंकवाद दक्षिण में तमिल व श्रीलंका का आतंकवाद पूर्व में बांग्लादेश व नागा, मिजो विद्रोहियों का आतंकवाद तथा पश्चिम में पंजाब का खलिस्तानी आतंकवाद मुख्य है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने 'आतंकवाद' पर प्रकाश ड़ाला है। उपन्यास में भारत के साथ-साथ विदेशीयों में भी हो रहे आतंकवाद का चित्रण किया है। कारगिल के इलाके में पाकिस्तानी फौजियों ने अघोषित युद्ध के साथ आक्रमण कर दिया था, जो कि वे घुसपैठिए इस्लामी मुजाहिद्दीन हैं। उन्होने लद्दाख, कारगिल,

द्रास, बटालिक, मश्को, तुर्तक, जोजीला काकसर, चिल्डियाल, घोष होतापाल आदि क्षेत्र की नियंत्रण रेषा तोड़कर कई-कई मील अंदर तक अपने अड्डे और बंकर बना लिये थे। ये आतंकवादी उत्तरी सीमान्त के पहाड़ों पर पड़ी बर्फ पिघलते ही हाजिर हुए थे। और उन्होंने वहीं पर गोलाबारी करनी शुरू की थी। इस पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियोंको खदेड़ने के लिए हवाई हमले किये गए। और 160 आतंकवादियों को मार डाला।

'जेहाद' के नाम पर अनेक आतंकवादी पैदा हो रहे हैं। जैसे कि 'ईजिप्त' के धर्मांध लोग पिरामिडों की सभ्यता का विनाश कर रहे थे। आज वह पूरा इतिहास और गौरवशाली सभ्यता मुसलमान कट्टरपंथियों और आतंकवादियों के भय से थरथरा रही है गमाल इस्लामिया और जेहाद जैसे अंधे इस्लामवादी संगठन सामान्य आदमी की जिदंगी पर कहर ढाह कर रहे हैं।

अमेरिका में मिस्त्र का मुल्ला शेख उमर अब्दुल रहमान गरीब अनपढ़ मुसलमानों को इस्लाम के नामपर भड़का रहा था। तो साउथ अफ्रिका में प्राइम मिनिस्टर डी क्लार्क की साजिश से जुलू आतंकवादियों ने शोषित जाति के गरीबों को अपना निशाना बनाया था। दूसरे विश्वयुद्ध में तानाशाह हिटलर ने पूरे लन्दन शहर को ध्वस्त कर दिया था। और उसी युद्ध में अमेरिका ने अणुबमों का प्रयोग हिरोशिमा और नागासाकी पर किया था। यह आतंकवादियों का घिनौना रूप दिखाया है। इस आतंकवाद को जापान आज तक भुगत रहा है।

पुरे विश्व में निम्न प्रकार के आतंकवादी संगठन हैं - बढ़ती आतंकवादी घटनाओं में लगभग सभी देश अर्थात पूरा विश्व इसके शिकंजे में है। विश्व के प्रमुख संगठनों में लंका में लिट्टे, आयरिश में आई.आर.पी. जापान में रेड़ आर्मी, इजरायल में गुरिल्ला छापामार, इटली में रेड़ ब्रिज, पाकिस्तान में हिजबुल मुजाहिद्दीन, पंजाब में बब्बर खालसा, जम्मू-काश्मीर में जम्मू -कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट इराक में कुर्द, स्पेन में बास्क, जर्मनी में बादरमीनहोप, फिलिपिन्स में हुकवाला हेप्स और मोरोज आदि आतंकवादी संगठन मौजूद हैं। इन आतंकवादी संगठनों से विश्व को खतरा पैदा हो गया है। अर्थात आज आतंकवाद से देशों में अराजकता पनप रही है जो संस्कृति को गर्त में ले

जा रही है। अत: इससे मुक्ति पाना आवश्यक है। इस प्रकार उपन्यासकार ने समाज को सजग करने की कोशिश की है।

5.2.2.2 नेताओंकी स्वार्थ वृत्ति

आज इन्सान सुख, चैन से जीवनयापन करना चाहता है। सुख-सुविधा को प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो गया है। आज उसकी ऑखों में स्वार्थ छिपा है। किसी भी अंजाम की पर्वा किये बिना वह स्वार्थ के पिछे दौड़ता जा रहा है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने नेताओं की स्वार्थी वृत्ति पर प्रकाश डाला है।

इतिहास गवाह है कि इस स्वार्थी वृत्ति के कारण ही हमें ब्रिटिशों के डेढ़ सौ वर्षो तक गुलाम बनना पड़ा। और आगे इसी वृत्ति के कारण हमारी 5000 साल की पुराणी एकता एवं अखंड़ता को लॉर्ड माऊंटबेटन ने पाँच महिने में तोड़ दिया।

अंग्रेजों ने अपने राज्य की नींव बंगाल में रखी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद शुजाउद्दीन ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा पर अपना अधिकार जमा लिया। उसके बाद अलीवर्दी खाँ और आगे सिराजउद्दौला उत्तराधिकारी बने। अंग्रेजों ने सिराजउद्दौला के सेनापति मीरजाफर को सिराजउद्दौला की राजगद्दी का लालच दिया था। स्वार्थ के कारण मीरजाफर ने प्लासी के युद्ध में सिराजउद्दौला से गद्दारी की। और अंग्रेजों ने प्लासी का युद्ध जीतकर अपने पैर बंगाल में जमा लिये।

सौ साल बाद सन्1857 के रूप में फिर एक जलजला आया। जिसने अंग्रेजों के होश-हवास उड़ा दिये। जिस प्रकार इस देश मे देशभक्तों की कमी नहीं उसी प्रकार गद्दारों की भी नहीं। कंपनी परस्त (गद्दारों ने)लोगों ने तात्या टोपे को पकडावा दिया। ग्वालियर ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का साथ नहीं दिया। बल्कि पटियाला, जिन्द ग्वालियर हैदराबाद, उदयपुर जयपुर आदि के शासको नें अंगेजो का तन, मन और धन से साथ दिया। शहंशाह बाहदूरशाह के एक सिपहसालार ने सोने के कुछ टुकडों के लिए दिल्ली का काश्मीरी दरवाजा अंग्रेजी फौज को खोल दिया । स्वार्थ के कारण ही सन् 1857 की आजादी की जंग मैं हिंदुस्तान हार गया और फिर शुरू हुआ विभाजन का दौर।

इस दौर के नायक है बॅ. जिन्ना जो कि अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बने थे। बॅ. जिन्ना अपने आपको तवारीख में अमर करना चाहते थे।" उनकी इस हवस ने देश का विभाजन किया। शायर इकबाल भी स्वार्थी था। जब उसकी स्वार्थ की पूर्तता नहीं हुई तो वह बौखला उठा और पाकिस्तान की माँग करने लगा। इतना ही नहीं उसने अपने सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा यह राष्ट्रगीत बदल डाला।

इस विभाजन के पिछे अंग्रेजों की स्वार्थी वृत्ति थी क्योंकि वे जानते थे इस विभाजन को गांधी जी कभी भी तैयार नहीं होगे, गांधी जी ने स्पष्ट कहा था कि मेरे जीते जी विभाजन नहीं हो सकता। जितना हो सके आजादी को टालना ही ब्रिटिशों की इच्छा थी। ताकि दूसरे विश्वयुद्ध में रिक्त हुई ब्रिटिश तिजोरि को फिर से भर दे।

इस तरह कमलेश्वर ने कितने पाकिस्तान में नेताओं की स्वार्थी वृत्ति को चित्रित किया है।

5.2.2.3 अलगगाववाद

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में अलगाववादी भावना को चित्रित किया है। एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या, शत्रुता आदि के कारण ही अलगाव पैदा होता है। जिसके कारण आज पाकिस्तान बन गया है। पाकिस्तान बनने के अनेक कारणों में कमलेश्वर ने अलगाववाद को भी गिनाया है। लोगों के दिलो-दिमाग में पालित अलगाववाद ने ही आंतकवादी घुसपैठियों को जन्म दिया और परिणाम स्वरूप पूरे विश्व में आतंकवाद का बोलबाला रहा हैं।

5.2.2.3.1 गलत नेतृत्व

अलगाववादी भावना को दिलो-दिमाग में बिठाने का कार्य गलत नेता करते हैं। जिस तरह बाबरी मस्जिद और राम जम्मभूमि मंदिर को लेकर आज तक झगड़े हो रहे हैं, ये सब उस गलत नेतृत्व का कमाल है। ये लोग धर्म और जाति के नामपर लोगों में एक दूसरे के प्रति अनास्था, इर्ष्या, डर पैदा करते हैं। जिस प्रकार अमेरिका में मिस्त्र का मुल्ला शेख उमर अब्दुल रहमान गरीब अनपढ़ मुसलमानों को इस्लाम के नाम पर भड़का रहा था। उसी प्रकार मुस्लिम लीगों के नेताओं ने अनपढ़ लोगों के दिलो-दिमाग में यह

बात बिठा दी थी कि 'हिंदुस्तान में इस्लाम सुरक्षित नहीं हैं।' इसीलिए पाकिस्तान बनाना जरूरी है। आगे वे यह भी कहते हैं कि "दुनिया के नक्शे पर एक और इस्लामी हुकूमत का रंग चढ़ जायेगा . . और यह भी नामुमकिन नहीं कि दिल्ली के लाल किले पर एक बार फिर सब्ज इस्लामी परचय लहरात नजर आए . . .। इसीलिए अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकडिए। आज उसी रस्सी का नाम मुहम्मद अली जिन्ना है। आप अल्लाह की ताकद है . . . उठिए और कहिए कि आप पाकिस्तान बनाना चाहते हैं।"[21]

इसी प्रकार के नेतृत्व के कारण लोगों के मन में अलगाव पनपता है। और वह अपने आपको कट्टर धर्मांध बनाने का भरसक प्रयास करते हैं। उपन्यासकार अलगाववाद प्रकाश डालने में सफल है।

5.2.2.3.2 भ्रामक प्रचार

अलगाववादी भावना को बढ़ावा देने में भ्रामक प्रचार भी सहयोगी होता है। इस प्रकार के प्रचार का भी लोगों पर असर होता है। " तिलक धारी पंडित ने बताया कि तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा - हे अर्जुन। हूँ तो मैं हूँ . . मेरे शिवाय और कोई नहीं है . . और आज गीता का वही मुरली मनोहर भारत के हर हिन्दू को पुकार रहा है कि उठो और गंगा -जमुना के पवित्र तट से इन म्लेच्छ मुसलमनों को हटा दो . . ।"[22] इस प्रकार के भ्रामक प्रचार ने हिंदू-मुसलमान दोनों बचपन के दोस्तों को अलग किया। हिंदू दोस्त भगवान की आज्ञा तोड़ना नहीं चाहता था, उसने मुसलमान दोस्त से कहा कि "भगवान किशन का हुक्म है कि तुमको गंगा - जमुना के किनारे से हटा दिया जाय - तो हटाना तो पडेगा . . और जिन्ना साहब का पाकिस्तान तो बन रहा ही है . . आराम की जिंदगी काटने की खातिर उधर ही चला जा।"[23] उसी प्रकार मुस्लिम लीग ने भी भ्रामक प्रचार को सांप्रदायिकता का चोला पहनाया। और प्रचार किया कि हिंदुस्तान में हिंदुओ द्वारा मुसलमानों पर अन्याय-अत्याचार हो रहे हैं। 'इस्लाम खतरे में हैं, 'अल्ला हो अकबर' हॅस के लिया पाकिस्तान, लढ़ के लेंगे हिंदुस्तान' आदि प्रकार के प्रचारों ने अलगाववादी भावना को और उत्तेजित किया।

इस प्रकार की अलगाववादी भावना को बदलना चाहिए नहीं तो अगली सदियों में मानवीय विश्व नहीं बनेगा, तब यही विश्व कब्रस्तान बन जायेगा और हर व्यक्ति अपनी-अपनी सोच का 'पाकिस्तान' बनायेगा।

5.2.2.4 विभाजन की समस्या

अगर हम हिंदुस्तान के इतिहास के पन्ने पलट कर देखना चाहे तो हमारे सामने वह 5000 साल का इतिहास पलट जायेगा। इस 5000 साल के इतिहास में कहीं भी गलती से भी 'विभाजन' की समस्या का जिक्र नहीं हुआ है। जैसे कि हिंदुस्तान में सबसे पहले आर्य आए। आर्यों ने इसे कभी सिंधु देश, सरस्वती देश या गंग देश के रूप में विभाजित नहीं किया। उनके ग्रंथों में हमेशा उसे जम्बूद्विप ही पुकारा गया। याने हमारी एकता और अखंडता की परपंरा आर्यों से शुरू हुई है, मगर बीसवी सदी में इस परपंरा को अंग्रेजों की साजिश ने तोड़ा। आज तक आये हुए विदेशी अपनी संस्कृति को भुलकर यहाँ की संस्कृति में रंग गए थे। लेकिन अंग्रेज ही ऐसे थे जो रहते यहाँ मगर दिल से इंग्लैंड में थे। उन्होंने कभी इस देश को अपना नहीं माना, बल्कि उसे अपना गुलाम देश मानकर अन्याय-अत्याचार किये। व्यापार का बहाना बनाकर आये हुए अंग्रेज यहाँ के राजकर्ते बन गए।

डेढ़ सौ साल राज्य करने के बाद भी अंग्रेजोंका मन नहीं भरा। यहाँ के नेताओं ने अंग्रेजों को स्वंतत्रता देने के लिए मजबूर किया था। लॉर्ड माऊंटबेटन स्वंतत्रता देने के लिए नियुक्त हुए थे। वे भी साजिश के तहत हिंदोस्तान में आये थे। जैसे भी हो हिंदोस्तान की आझादी को रोक देना उनका फर्ज था, अगर आझादी देनी पडे तो विभाजन करके हिंदू-मुसलमान में फुट डालकर देते। इस सोच के साथ लॉर्ड माउंटबेटन आये थे।

पहले ही साजिश के तहत मुस्लिम लीग को 'पाकिस्तान' के नामपर विभाजन के लिए तैयार किया था। देश में हो रहे हिंसाचार से तंग आकर नेहरू, गांधी, पटेल आदि भी विभाजन के लिए तैयार हो गए। और माउंटबेटन ने सिरिल रेड किल्प से हिंदुस्तान-पाकिस्तान की सरहदें तैयार कर ली। 15 अगस्त, 1947 को भारत आझाद हुआ। भारत ने आजादी के सुख और दु:ख जशन और नरसंहार का नजारा एक साथ देखा

जहाँ हिंदू और सिखों की लाशे पड़ी थी वह पाकिस्तान था। जहाँ मुसलमानों की लाशे पड़ी थी वह भारत था। लाशों ने ही खुद ही सरहदों को तय कर दिया था। खुली हुई मुर्दा आँखे अपने आजाद इलाके के सन्नाटे को देख रही थी। "टुकडे हुए। केवल धरती के नहीं, उन तमाम निरपराध मासूम लोगों के जिनके शव पूरे उत्तर भारत की धरती बिखर गये . . . जिन्हें खाने के लिए संसार भर के मांस भक्षी पक्षी और पशु भारत यात्रा पर आये थे। यह महाभोज संसार के इतिहास में अकेला था।"[24]

जो हालात विभाजन के दौरान बने थे उससे लगता है कि "उपनिवेशवाद ने आजाद देश के नाम पर दुनिया के सबसे बड़े कब्रिस्तान को बनाने में सफलता हासिल की है।" बँटवारा शुरू हो गया और अंग्रेज अफसर वापस जाने की तैयारी शुरू कर रहे थे। आर्मी के अफसरों का भी बँटवारा होने लगा। कमलेश्वर यह मानते हैं कि सन् 1947 में एक पाकिस्तान बना। पर आज दुनिया में कितने और पाकिस्तान बन रहें हैं। खुद पाकिस्तान में भी 'पाकिस्तान' बन रहे हैं। लेबनान से पाकिस्तान का मुर्तजा भुट्टो खुद अपने मुल्क को खून से नहला देने की पेशकश कर रहा है। वह अपने वालिद की सियासी विरासत में अपनी बहन बेनजीर भुट्टो से बँटवारे की माँग कर रहा है। बनते हुए पाकिस्तानों की वजह से दुनिया में तबाही मच गयी हैं।

इस तरह कमलेश्वर ने विभाजन की समस्या को चित्रित किया है।

5.2.2.5 शरणार्थीयों की समस्या

भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद हिंदू और मुसलमानों के सामने अपने ही देश में शरणार्थी बनने का डर पैदा हुआ था। पाकिस्तान के हालात कुछ अलग थे, वह देश इस्लाम और मुसलमान कौम के नामपर बना था, वहाँ औरों के रूकने का सवाल ही नहीं था। लेकिन हिंदुस्तान में ऐसा नहीं था। वह धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख-ईसाई सब 'हिंदोस्तानी' बनकर रहते हैं।

उच्चे ओहदे की तलाश में पढ़े -लिखे मुसलमान पाकिस्तान जा रहे थे, और अनपढ़ निरक्षर मुसलमान जो इस विभाजन के दौरान अपने आपको यहाँ असुक्षित महसुस कर रहे थे वे भी पाकिस्तान जा रहे थे। 'कितने पाकिस्तान' अंतर्गत कमलेश्वर ने

इनका चित्रण किया है - "हम पर छोड़कर पाकिस्तान जा रहे थे . . . वैसे तो हमारे घर में सब कुछ था। हमारे अब्बा बटाई पर खेती करके आराम से रहते थे। घर में गाय भैंस, बैल थे। . . . सब आराम से चल रहा था। फिर पाकिस्तान की लकीर खिंची तो ढाणी में रहना मुश्किल हो गया। गाँव-ढाणी के सब मुसलमान कारवाँ बनाकर उसे लकीर केपार पहुँचने के लिए चल डे।" यहाँ से पाकिस्तान जाने-वालों को यह भी समस्या थी कि "यह इतना मुश्किल दौर है कि कही किसी का घर नहीं है . . . सब बेघर हो गए हैं . . चल तो पड़े हैं लेकिन क्या हमें मालूम है कि पाकिस्तान में हमारा घर कहा है ?"[25] इस प्रकार की समस्या अपने ही देश में शरणार्थी बने सैयद सिराज के परिवार को थी, जो खून की नदियाँ पार करता विद्या सहित पाकिस्तान जा रहा था। उनकी नजर में पाकिस्तान एक सपना है उसी सपने को पाने के लिए अब वे निकल पड़े है।

मगर कुछ ऐसे भी मुसलमान थे जो अपनी यादों को छोड़ जाना नहीं चाहते थे। वे पाकिस्तान जाने के बदले हिंदुस्तान में रहना पसंद करते थे। जैसे "बफाती बोला- जिंदगीत हिऑ गुजराल, अब मरे किनारे अइलीत पाकिस्तान जाई ? अब चाहे कुरआन का आयत बोले या तुम्हरे गीता के किसन भगवान . . . हम त ना जाइब पाकिस्तान . . .।"[26]

इसी तरह शरणार्थीयों की समस्या का चित्रण 'कितने पाकिस्तान' में गहरी संवेदना के साथ हुआ है।

5.2.2.6 रियासतों की समस्या

सन् 1857 के विद्रोह में देशी रियासतों ने पूर्णत: राजभक्ति का परिचय देते हुए विद्रोह के दमन में ब्रिटिश सरकार को हरसंभव सहयोग दिया। अत: ब्रिटिश सरकार ने देशी रियासतों को नष्ट करने के बजाय उन्हे ब्रिटिश भारत का अंग बनाने की नीति समाप्त करते हुए उनके पृथक अस्तित्व को मान्यता दी। भारत की स्वाधिनता के समय देश में कूल पाँचसो पैसंट रियासते मौजूद थी।जिसका भविष्य तय होना बाकी था। ब्रिटिश सरकार उन्हें भारत-पाकिस्तान के रहमों - करम पर नहीं छोड़न चाहती थी।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने इस समस्यापर भी प्रकाश डाला है उन्होंने लिखा है कि वायसराय का सलाहकार कोर फील्ड लंदन में बैठा अपने सामंतों को समझा रहा था कि भारत की सारी रियासतों की संधि ब्रिटिश क्राउन से है। ब्रिटिश क्राऊन इस दायित्व का विसर्जन नहीं कर सकता। तब ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री चर्चिल ने कहा था "यह राजे-महाराजे नवाब और निजाम हमारे मित्र और ताबेदार रहे हैं। इनकी संधियाँ हमारे साथ है . . . इन्हें आजाद करने की जिम्मेदारी हमारी है।"[27] लेकिन नेहरू, पटेल और जिन्ना ने भी इस विचार का विरोध किया था।

सन् 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्रदान करते समय यह प्रावधान किया गया था कि देशी रियासतें इस संबध में निर्णय लेने के लिए स्वंतत्र होगी कि वे भारत में मिले या पाकिस्तान में। स्वतंत्रता- कामी कुछ रियासतों यथा हैदराबाद भोपाल,ट्रावनकोर, काश्मीर आदि ने आरंभ में कुछ कठिनाईयाँ अवश्य पैदा की, पर उन पर काबू पा लिया गया।. . . कश्मीर नरेश भारत में विलय होने राजी हो गया। बहावलपुर पाकिस्तान में विलय हुआ। ..मध्यप्रदेश, हिमाचल, राजस्थान, नीलगिरी धेनकनाल उड़ीसा आदि भारत में विलीन हो गए।

इस प्रकार कमलेश्वर ने स्वतंत्रता के साथ रियासतों की समस्या पर प्रकाश डाला है। पर यह जरूर कहना चाहिए कि आज का विस्तृत भारत सरदार पटेल के प्रयत्न का सुफल है। यदि उन्हें स्वतंत्र भारत का निर्माता कहा जाये तो गलत न होगा। साथ में हमें देशी राजाओं के सहयोग को छोटा करके नहीं देखना चाहिए। इन सभी के प्रयासों से ही आज का भारत अस्तित्व में आया है।

5.2.2.7 उत्तराधिकार की समस्या

सामान्यत: पिता की मृत्युपरान्त उनके पुत्रों को मिलनेवाले अधिकार ही उत्तराधिकार माने जाते हैं। समाज में प्रचलित रूढ़ि परंपरा के अनुसार यह अधिकार बड़े बेटे को दिया जाता है।

सत्रहवी सदी में 'उत्तराधिकार' के लिए कोई नियम तथा बंधन नहीं थे। शहाजहाँ ने अपने भाई-भतीजों को मरवा कर हिंदुस्तान की राजगद्दी हासिल की थी।

मतलब सत्रहवी सदी में तलवार की शक्ति के आधार पर उत्तराधिकार का निर्णय हुआ करता था। 6 सितम्बर, 1657 ई. शहाजहाँ बीमार पड़ा। अत्याधिक बीमार पड़ने के कारण उसने दरबार मे आना तथा झरोखा-दर्शन में आना भी बंद कर दिया। उसकी बीमारी का समाचार तुरंत समस्त साम्राज्य में फैल गया। शहाजहाँ का प्रत्येक पुत्र सिंहासन प्राप्त करने को उत्सुक था। विभिन्न सरदार अलग-अलग शहजादों का पक्ष लेने के लिए तैयार थे। शहाजहाँ ने अपने सभी सरदारों के सन्मुख अपने सबसे बड़े पुत्र दारा को उत्तराधिकारी घोषित किया था। और एक सोने का सिंहासन बनाकर अपनी राजगद्दी के पास रखा था। क़िन्तु उत्तराधिकार के मामले में मुस्लिम कानून बहुत लचीला था, इसीलिए शहाजहाँ की आँखो के सामने ही उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ जिसमें औरंगजेब जैसे धर्माधं कट्टर सेना नायक को सफलता हासिल हुई। और जो घिनौना कृत्य शहाजहाँ से हुआ था वही इतिहास औरंगजेब ने फिर से दोहरा दिया।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि इस्लाम ने अपनी राजव्यवस्था के लिए वंशानुगत अधिकारी के कुदरती हक जैसी अवधारणा पर कभी विश्वास नहीं किया। इसीलिए मुसलमान शासकों के यहाँ उत्तराधिकार हक की बल पर नहीं , तलवार के बल पर तय होता हैं।

5.2.2.8 गृहयुद्ध की समस्या

कमलेश्वर ने प्रस्तुत उपन्यास में गृह युद्ध की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने 'दो' गृह युद्धों का चित्रण किया है।

(1) महाभारत का (धर्म युद्ध)

(2) सत्रहवी सदी का गृह युद्ध (उत्तराधिकार युद्ध)

महाभारत के युद्ध में पांडव और कौरव आपसी रिश्ते-नाते भूलकर एक -दूसरे से लढ़े। इस गृह युद्ध में अठराह औक्षणी सेना मारी गयी। कमलेश्वर ने इस युद्ध का वर्णन करते हुए लिखा - है कि "अट्ठारह दिनों के युद्ध के बीच बार-बार और तरह-तरह से सत्य की हत्या हुई थी ... युद्ध के पहले दिन जब महाधनुर्धर अर्जुन नंदी घोष रथ पर युद्ध भूमि में आया था, तब उसके सारथी कृष्ण ने उसे दिया था जीवित रहने के

कारणों के परम सत्य का सज्ञान । तब कृष्ण ने किया था मृत्यु से मृत्यु को जीतने का अभिनव अविष्कार। मौत कौरवों ने पैदा की थी, उसे जीतना जरूरी था मौत को जीतने के लिए युद्ध के पहले ही दिन हुई थी संबंधों की मौत ! दूसरे दिन हुई थी सम्मान और संवेदना की हत्या। तीसरे दिन हुआ था करूणा का अंत। चौथे दिन सारी नैतिकताओं और धर्म के प्रतिमानों का पराभव और फिर बचा क्या था ? पाँचवे दिन हुआ था युद्ध का उन्माद। और छठवें दिन शक्ति और साहस की जगह हिंसा और कटुता का अवतरण। सातवे दिन पैदा हुई थी घृणा। आठवे दिन हुआ था वधिक स्पर्धा का जन्म और नौंवे दिन सारे मानवीय मान-मूल्यों का दमन और पतन।"[28]

इस प्रकार महाभारत का युद्ध 'धर्मयुद्ध' की परिभाषा से अलग होता गया, इसमें स्वार्थ प्रेरित भावना को अत्याधिक महत्त्व दिया गया। और यह युद्ध आपसी वैर-भाव, घृणा आदि का प्रतिशोध लेने के लिए खेला हुआ गृह युद्ध हो गया। इस गृह युद्ध में आपसी स्वार्थ के लिए गैर जरूरी मौत का वरण किया गया।

महाभारत की तरह सत्रहवी सदी में स्वार्थ तथा नेतृत्व की लालसा ने गृह युद्ध की ज्वाला को भडकाने का कार्य दिया। दारा के तीनो भाई-मुराद, औरंगजेब और शुजा दारा से ईर्ष्या करते थे। मुराद के साथ औरंगजेब का साम्राज्य संबंधि समझौता हुआ था। मुराद और औंरगजेब की संयुक्त सेना ने धर्मट में शाही सेना को परास्त किया। "धर्मट के विजय के बाद औरंगजेब और मुराद ग्वालियर होते हुए आगे बढ़े। आगरा से 8 मील दूर सामूगढ़ में दारा शिकोह ने उनका मुकाबला किया। पर दाराशिकोह की इस युद्ध में हार हुई वह भाग गया। औरंगजेब आगरे की तरफ बढ़ा। आगरा पर उसका अधिकार हो गया और शहाजहाँ को बंदी बनाया गया। मुराद को धोखे से पकड कर बंदी बना लिया गया। बाद में अपने दिवान की हत्या करने के आरोप में उसे मृत्युदंड दिया गया। इस बीच शहाशुजा ने एक बार पुन: भाग्य आजमाया। परंतु वह पराजित हुआ और अराकान की तरफ भाग गया, वहाँ अराकनियोंने उसे मार डाला। इधर-उधर भटकने के बाद दारा भी पकड़ा गया और उसे भी मृत्युदंड की सजा दी गई। दाराशिकोह का लड़का सुलेमान को जहर देकर मार दिया गया।"[29] इस प्रकार गृहयुद्ध में औरंगजेब ने अपने मार्ग में आनेवाले हर छोटे-मोटे रोड़ों को मिटाकर हिंदुस्तान की राजगद्दी हासिल की।

इसी प्रकार मुस्लिम लीग ने 'पाकिस्तान' की माँग करने के बाद 'सीधी कार्यवाही' करने का फैसला लिया। उसी वक्त भी देश में 'गृहयुद्‌ध' की सारी स्थितियाँ मौजूद हो चुकी थी। धर्म के नाम पर लोगों के दिलों में अलगाव का जहर भर दिया गया था। परिणामत: सांप्रदायिक दंगों में हजारों निरपराध लोगों की बली दी गई।

इस प्रकार कमलेश्वर ने गृहयुद्‌ध की समस्या पर प्रकाश डाला हैं। साथ ही कितने पाकिस्तान उपन्यास में राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है।

5.2.3 आर्थिक समस्या

आर्थिक समस्या जटिल समस्या है। समाज में ज्यादा महत्त्व धन को दिया जाता है। अर्थ और अर्थव्यवस्था आज वह धूरी बन गयी है जिसके द्‌वारा समाज में व्यवहार,संबंध, रिश्ते आदि सभी निर्धारित होते हैं। अर्थ के पिछे इमान, प्यार, आत्मसम्मान और शरीर बिकता हैं। आज की दुनियाँ में पैसा ही भगवान बन गया है। हम पैसों के गुलाम बन गए हैं। आर्थिक समस्या के बारे में डॉ. योगेश सुरी कहते हैं, अर्थव्यवस्था और अर्थ के कारण पति-पत्नी के आपसी संबंध बिघड जाते है आज के पुँजीवादी युग में रूपया है तो सबकुछ है और रूपया इन्सान को सबकुछ सीखा देता है।

मनुष्य की दृष्टि अर्थोन्मुख होने के कारण ही संयुक्त परिवारों में दरार पड़कर अलग-अलग छोटे -छोट परिवार बन गए हैं। विषम व्यवस्था के कारण अनेक मध्य, निम्न मध्य वर्ग के परिवारों को कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं। आर्थिक व्यवस्था के कारण समाज तीन वर्गो में बँट गया हैं उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग।

5.2.3.1 उच्चवर्ग

वर्तमान समाज में आर्थिक दृष्टि से उच्चवर्ग अत्यंत समृद्‌ध हैं लेकिन अन्य दो वर्गों की तुलना में इस वर्ग के लोग बहुत कम है। फिर भी उच्चवर्ग के लोग धनप्राप्ति के लालच से सबसे अधिक ग्रस्त है। आर्थिक दृष्टि से समृद्‌ध होकर भी धन प्राप्ति के लिए यह समाज मानवी मूल्यों की हत्या करता है और मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का

शोषण करता है । उच्चवर्ग के पूँजीपति समाज में स्थित उत्पादनो के साधनों पर अपना अधिकार रखते हैं और अधिक धन बढ़ाते हैं।

5.2.3.2 मध्यवर्ग

संपूर्ण भारतीय समाज में उच्च वर्ग और निन्मवर्ग की तुलना में मध्यवर्ग ही संख्या की दृष्टि से बहुत बडा है। इस वर्ग के कुछ लोग कुछ हद तक सुखमय जीवन बिताते हैं तो कुछ लोग बडी कठिनाई से जीवन यापन करते हैं। मध्यवर्ग के भी दो भेद किये जा सकते हैं -

(1) उच्च मध्यवर्ग

(2) निन्म मध्यवर्ग

5.2.3.3 निम्नवर्ग

निम्नवर्ग के पास उत्पादन का कोई साधन नहीं होता। यह समाज (वर्ग) प्रत्यक्ष श्रम करता है। ये मेहनत से मजदूरी कर अपना जीवनयापन करते है। "हिंदी साहित्य कोश" के अंतर्गत धीरेंद्र वर्मा ने निम्नवर्ग के संबंध में लिखा है, "यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है इस वर्ग के अतंर्गत किसान तथा मजदूर आते हैं।" निम्नवर्ग रोजी रोटी की समस्या हल करने में लगा रहता है, अधिकतर शोषण हो जाने के कारण तथा उनकी स्थिति पर विचार विनिमय करते हुए डॉ. वीणा गौतम निम्नवर्ग के बार में कहती है "यह स्वयं निम्न मध्यवर्ग के निकट लाने में सतत प्रयत्नशील रहता है। उसमें ईमानदार वेतनभोगी कर्मचारी आते हैं जो अपनी ईमानदारी के परिणाम स्वरूप प्रतिदिन निर्धन हो रहे हैं।"[30]

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने इन तीनों वर्गो का विचार किया है। तथा इन तीनों बर्गो के सामने आनेवाली आर्थिक समस्या पर प्रकाश डाला है।

5.2.3.4 ब्रिटिश शासन पूर्व भारत की आर्थिक स्थिति

कंपनी राज्य की स्थापना से पूर्व भारत आर्थिक दृष्टि से बहुत समृद्ध था। सन् 1700 ई.में. भारत की आर्थिक दशा का वर्णन करते हुए फ्रान्सीसी यात्री बर्नियर ने

लिखा था कि - "यह भारत अथाह गड्ढ़ा है, जिसमें संसार का अधिकांश सोना और चांदी चारों तरफ से अनेक रास्तों से आकर जमा होता है और जिसे बाहर निकालने का उसे एक भी रास्ता नहीं मिलता।"[31] बंगाल के बारे में भी उन्होंने कहा है कि -यह मिस्त्र से भी अधिक धनी देश है। लॉर्ड क्लाइव को बंगाल के बारे में कहना हैं "मुर्शिदाबाद का शहर उतना ही लम्बा, चौडा, आबाद और धनवान है, जितना कि लन्दन का शहर। अतंर इतना है कि लन्दन के धनाढ्य से धनाढ्य व्यक्ति के पास जितनी संपत्ति है, उससे कहीं ज्यादा सम्पत्ति मुर्शिदाबाद में अनेकों के पास हैं।"[32]

इन कथनों से भारत की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

5.2.3.5 ब्रिटिशों की व्यापार नीति एक समस्या

कंपनी शासन पूर्व भारत एक धन संपन्न कृषि, एंव उद्योग प्रदान देश था। इसका मूल कारण यह था कि भारत में जो भी विदेशी विजेता आया उसने भारत को अपना घर बना लिया और भारत की आर्थिक उन्नति को अपनी समृद्धि का प्रतीक माना। परिणाम स्वरूप भारत की आर्थिक स्थिति अच्छी बनी रही और भारत की धन संपदा भारत में ही बनी रही।

परंतु अंग्रजोंने इस देश को अपना घर नहीं माना। उनका ध्येय भारत की धन-संपदा को बटोर कर स्वदेश ले जाना था। इस समय तक इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति काफी आगे बढ़ चुकी थी। अत: कारखानों को कच्चे माल की मंडियां और तैयार माल खपाने के लिए बास्तारों की आवश्यकता थी। अंग्रेज सरकार ने अपने देश के कारखानों को भारत में उपयुक्त दोनो सुविधाएँ प्रदान की। जो माल इंग्लैंड से आता था उस पर बहुत कम कर (आयात) लिया जाता था।

अर्थात कंपनी सरकार ने भारत को एक ऐसा कृषि-प्रधान उपनिवेश बनाने का निश्चय कर लिया था, जो उनके देश को कच्चा माल देते रहे और बना हुआ माल खरीदता रहे।

ऐसी व्यापार नीति के कारण भारतीय कुटीर-उद्‌योगों का अंत हो गया और इन उद्योगों से जीविका कमाने वाले हजारों परिवार बेकार हो गए।

5.2.3.6 धन की अतिरिक्त लालसा

वर्तमान युग में औद्‌योगिक विकास भौतिक सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षण पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव, सुविधा -प्राप्ति की अति महत्त्वकांक्षा आदि के कारण अर्थ प्राप्ति ही मनुष्य के जीवन का चरम लक्ष्य बनी है। अर्थ पूजक मनुष्य ने धन दास्यत्व स्वीकार करके सभी नैतिक मूल्यों को तोड़ना प्रारंभ किया है। आज-कल समाज में सम्मान एंव प्रतिष्ठा की कसौटी भी मानव-मूल्य न होकर अर्थ-मूल्य हो गई है। धन प्राप्त करने के लिए मनुष्य उसके पीछे छाती फूटने तक दौड़ रहा है। धन लालसा एक ऐसा नशा है जो एक बार सिर पर सवार हो जाता है तो उतर ही नहीं पाता।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में धन की अतिरिक्त लालसा इस समस्या पर कमलेश्वर ने प्रकाश डाला है। सन् 1600 इ.में स्थापित हुई ईस्ट इंडिया कंपनी का उद्‌देश्य ही था व्यापार और धन संपदा। धन की अतिरिक्त लालसा के कारण ही समुद्री लुटेरे देशभक्त बने थे। इन लुटेरों को सम्राज्ञी विक्थेरिया ने अपने साम्राज्य 'नाईट हुड' दिया था। "स्पेन, पुर्तगाल, फ्रान्स, ब्रिटेन और डचों के राजघरानों और इनके इतिहासकारोंने इन समुद्री लुटेरों और तस्करों को महान् समुद्री यात्रियों नई दुनिया के खोजियों और अन्वेषकों के खिताब दिए है . . क्योंकि उन राजघरानों इस लूट के धन में से पाँचवा हिस्सा बतौर नजराना मिलता है।"[33]

इस अतिरिक्त धन के बलपर ही अंग्रेज तस्करों का प्रमुख विलियम जार्डीन सन् 1841 में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट का मेंबर बना था। तो जेम्स माथेसन ने इस धन से स्काटलैंड के पश्चिमी तट पर हजारों एकर जमीन खरीदी थी उस के सिर्फ तटबन्धों की मरम्मद पर जेम्स ने तीन लाख उनतीस हजार पाउण्ड खर्च किया था। इन लोगों के सिर पर धन का ऐसा नशा छाया था कि वे धन के लिए अफ्रिका-एशिया से मेहनतकुश कुलियो को जहाजों में भर कर लाते और उनको बेच देते। धन की अतिरिक्त लालसा के कारण मुगल कालखंड में भी मंदिरो को तोड़ा गया। मोहम्मद-बिन-कासिम जो हिंद को लुटने आया था

इसने मंदिरों और बौद्धों के विहारों को लूटा। मोहम्मद-बिन-कासिम ने मुलतान की बस्ती के पूरब की तरफ के बड़े तालाब में स्थित मंदिर को तोड़ा जिससे उसके हाथ तेरा हजार दो सौ मन सोना आया था। और धन की अतिरिक्त लालसा के कारण ही उसने मंदिरां तोड़ना शुरू किया था।

बाबर ने भी धन की लालसा के कारण सोने की चिडियां हिंदुस्तान पर अपत्ती हुकूमत स्थापित की।

इस तरह कमलेश्वर धन की अतिरिक्त लालसा को समस्या के रूप में चित्रित किया है।

5.2.3.7 गुलामों का व्यापार

दुनिया का भगवान 'पैसा' बन गया है। हर कोई उसे पाने के लिए बेचैने है। अपने आपको उच्चवर्गीय तथा सुशिक्षित समझनेवाले भी 'धन' के लिए अपना इमान बेच देते हैं। इन्सानियत भुल जाते हैं। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में ऐसे ही 'धन के गुलामों' पर प्रकाश डाला है, जो धन कमाने के लिए इन्सान को 'गुलाम' मानकर बेच देते हैं।

कबीले नष्ट हो जाने के कारण उपनिवेशवादियों को मजदूर नहीं मिल रहें थे। इसीलिए उपनिवेशवादियों ने अफ्रिका -एशिया से अपने जहाजों में मेहनतकश कुलियों को भर लाते और उन्हें डकार इलाके के समुद्रतट के पासवाले टापू पर जहाँ गुलामों का बाजार भरता था वहॉ उतार दिया जाता था। वही गोरी टापू से कोलबंस के अमरिका तक समुद्री रास्ता जाता था। "घरों के नीचे है तबेले और बाड़े, जिनमें सेनेगल और मध्य अफ्रीका से लाए गए नीग्रोज को नंगा करके पशुओं की तरह जंजीरों में बाँध दिया जाता है। कीमत के लिए आदमी का धड, बच्चों के दाँत, औरतों की छातियाँ देखी मसली जाती हैं। . . फिर इन्हें गोरी टापू से नावों में भरकर उन जहाजों तक पहुँचाया जाता है, जो इन गुलामों को अमरिका ले जाते हैं, और वापसी में यही जहाज लुटी हुई धन संपदा अपने देशों को पहुँचाते हैं . . .।"[34]

ऐसे ही गुलामों को बेचकर इस उपनिवेश वादियों ने 1600 टन चाँदी और 180 टन सोना हासिल किया था। इस तरह इन्सान द्वारा धन के लिए इन्सानों को बेचना ही मानवता के मुँह पर थप्पड था । इस प्रकार पूँजीवादियों की धन लालसा और निर्दयता पर प्रकाश डालने का प्रयास कमलेश्वर ने किया है।

5.2.3.8 जमीन की पैदावारता की समस्या

आर्थिक समस्या के अतंर्गत कमलेश्वर ने 'जमीन की पैदावार' पर प्रकाश डाला है। आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में जमीन भी एक महत्त्वपूर्ण साधन है। अगर उसकी पैदावार अच्छी नहीं तो वह भी एक समस्या के रूप में सामने आती है।

"कितने पाकिस्तान" उपन्यास के अंतर्गत कमलेश्वर ने राजस्थान के रेगिस्तान का चित्रण किया है। बंजर जमीन, जिस पर वर्षा की एक बूँद तक नहीं गिरी थी। पानी के बिना पैदावार नहीं हो सकती। इसी कारण बुटासिंह के भाई-भौजाई खेतों की जायदाद का बँटवारा नहीं करना चाहते थे। क्योंकि खेतों में पैदावार नहीं होती है। इसीलिए उन्होंने पच्चास -पचपन साल तक बुटासिंह की शादी भी नहीं करवायी। बुटासिंह कहता है - "वैसे भी खेतों में पैदावार नहीं है। जो कुछ होती है उससे उन्हीं के बाल बच्चों का पेट भर जाय यही काफी है। मेरी शादी होती, बाल बच्चे होते तो गरीबी और बढ़ जाती . . . खेतों का बँटवारा होता। जिन्दा रहने की मारामारी में कुछ भी हो सकता था।"[35]

इस तरह कमलेश्वर ने निम्नवर्ग के लोगों की आर्थिक दशा का वर्णन किया है। यदि खेतों की पैदावार ठीक तरह हो जाती तो शायद निम्नवर्ग को आर्थिक दशा से कुछ राहत मिल सकती है।

आज के युग अणुयुग में बार-बार किए जाने वाले अणु परिक्षणों की वजह से भी जमीन की पैदावर कम हो गयी हैं।

5.2.3.9 आर्थिक शोषण तथा विषमता

अर्थाभाव के कारण उत्पन्न समस्याओं के अनेक कारण हैं उनमें प्रधान कारण है पूँजीवादी सभ्यता का विकास। पूँजीवादी सभ्यता की मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप देश में आर्थिक शोषण तथा विषमता स्वाभाविक है। आदिकाल से भूमि के स्वामी जमींदार सामंतवादी वृत्ति के रहे हैं। अपने अधिनस्थ एवं निरीह व्यक्तियों का शोषण उनका अधिकार रहा। आज तो स्थिति ऐसी है कि बड़ा आदमी छोटे आदमी का शोषण करता है, छोटा आदमी उससे भी छोटे आदमी का शोषण करता है।तात्पर्य शोषण का यह सिलसिला जारी है। इसका अंत नहीं है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने अर्थिक शोषण तथा विषमता की समस्या पर प्रकाश डाला है। उनका मानना है कि ब्रिटिश सत्ता ने भारत का आर्थिक शोषण किया है। ब्रिटिशोंकी सौदागरी सभ्यता ने भारत को अपना लक्ष्य बनाया है। और डेढ़ सौ साल तक आर्थिक शोषण का सिलसिला जारी रहा। ब्रिटिश साम्राज्य से शोषित धनराशी से ब्रिटीशों ने अपना 'आइल ऑफ वाइट' भर रखा था। प्रस्तूत उपन्यास में माऊंटबेटन कहता है "हमारे पास आइल ऑफ वाइट में उस वक्त भी इतनी दौलत थी कि हामरी दस पीढ़ियाँ आराम से खा सकती थी और जीवित रह सकती थी।" याने माऊंटबेटन अपने पूर्वजोंकी काली करतुतों को नरजअंदाज करना चाहता है। और वह बताना चाहता है कि यह दौलत पूर्वजों ने मेहनत, परिश्रम से कमाई है। लेकिन ऐसा नहीं है। "आपके आइल ऑफ वाइट में आपके पसीने की दौलत नहीं, दुनिया के उपनिवेशों की शोषित दौलत मौजूद थी।"[36]

इससे ब्रिटिशों की शोषित नीति का पर्दाफाश होता है। आर्थिक शोषण तथा विषमता के कारण समाज में दो वर्ग निर्माण हो जाता है। (1) शोषित (2) शोषक। इस बारे में डॉक्टर रमेश देशमुख का कथन है - " दरअसल पूँजीवादी व्यवस्था में अमीर और गरीब के बीच की खाई इतनी गहरी हो गयी है कि उसे पटना सरल काम नहीं है। एक तरफ गरीब अभाव ग्रस्त लोग हैं जिनके लिए त्यौहार मनाना भी एक मजबुरी ही है। दूसरी ओर अमीर लोग हैं जिनके लिए रोज ही दिवाली रहती है। अर्थात वर्गभेद तथा शोषण की

जड़ है ।"जैसे कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन ध्वस्त था और भूखा मर रहा था । "लेकिन इसके बावजूद भी महारानी विक्टोरिया के वंशजों की गर्विली साम्राज्यवादी मानसिकता और परंपरा पर कोई फर्क नहीं आया है । बर्किंधंम पैलेस और अंग्रेज सामन्तों की हवेलियों में विजय के उल्लास और नये वर्ष के स्वागत में बेहद महँगी और अप्राप्य टर्की का गोस्त पक रहा है ।"

इसी तरह कमलेश्वर ने आर्थिक शोषण की समस्या पर प्रकाश डाला है ।

5.2.3.10 गरीबी की समस्या

प्राचीन काल से समाज में गरीबी की समस्या दिखाई देती है । गरीबी के कारण अनेक प्रश्न निर्माण हो रहे है । खूनी डाकू, चोर भी गरीबी के कारण ही निर्माण होते हैं । दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि प्रथाएँ भी इसी कारण बढ़ रही है । पाश्चात्य देश में गरीबी नहीं ऐसा नहीं फिर भी भारतीय समाज में इसका स्वरूप भयावह है । वर्तमान समाज में यह स्वरूप और भयावह होता जा रहा है । अलग -अलग मार्ग को अपनाकर गरीबी हटाने के प्रयास हो रहे हैं ।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने गरीबी की समस्या पर प्रकाश डाला है । गरीबी के कारण निम्नवर्ग के सामने रोजी-रोटी की समस्या खडी हो जाती है । स्वतंत्रता पूर्व गोरे रंग के साहब ने जनता का शोषण किया । अब बादामी रंग के साहब शोषण कर रहे हैं । स्वतंत्रता के पूर्व साधारण जनता का सपना था देश आझाद हो जायेगा, किसी को किसी बात की कमी नहीं रह जायेगी । परंतु आज स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देखा तो अमीर बनता जा रहा है । गरीब -गरीब होता जा रहा है । और गरीबी की समस्या समाज के लिए घातक साबित हो रही है ।

गरीबी से ग्रस्त समाज का चित्रण करते हुए कमलेश्वर ने अपनी बिरादरी की सारा शगुफ्ता पर प्रकाश डाला है । सारा शगुफ्ता ने 'आँख' नामक कविता संकलन का संपादन किया है । उसमें सारा शगुफ्ता ने आखरी खत जोडकर खुदकुशी की थी । क्योंकि अस्पताल में उसने एक बेटे को जन्म दिया था, पर वह ज्यादा देर जिंदा नहीं रहा । उस वक्त सारा शगुफ्ता के पास पाँच रूपये से ज्यादा पैसा नहीं था । वह भी उनकी घर

मालकीन देकर गयी थी। सारा शगुफ्ता कहती है "उस वक्त मुझे एक सौ तीन डिग्री बुखार था। अस्पताल वालों को अपने पैसों की दरकार थी। तब मैने कहा - मेरे बेटे की लाश रेहन रख लीजिए। मैं पैसे चुका कर इसे ले जाऊंगी।"[38]

इससे गरीबों की हालात सामने आती है। गरीब, गरीब ही बन जाता रहा है इसे भी नकारा नहीं जाता। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में साऊथ अफ्रीका में गरीबों पर हो रहे जानलेवा हमलों पर प्रकाश डाला है। जैसे साऊथ अफ्रिका के प्राइम मिनिस्टर डी 'क्लार्क' ने उनतालीस शोषित और गरीब लोगों को मार डाला।

इस तरह कमलेश्वर ने पारतंत्र्य में गरीबी की बढ़ती समस्या पर प्रकाश डाला है। जिससें भिखारी लोगों की संख्या भी बढ़ती जा रही है।

प्राचीन काल से समाज में गरीबी की समस्या तो थी पर भिखमंगो की समस्या नहीं थी। कमलेश्वर ने कहा है कि "भिखारियों की नस्ल इंडस्ट्रियल रेवोल्यूशन से पहले दुनिया के किसी देश में मौजूद नहीं थी। अमीर और गरीब पहले भी थे लेकिन भिखारियों का जन्म उपनिवेशी बंदोबस्त के साथ हुआ . . . जब आर्थिक और जीवनगत न्याय के मूल्यों का अन्न और मुनाफा केंद्रित अंध शोषण और स्पर्धा का जन्म हुआ . . . नहीं तो इससे पहले गरीब तो थे, पर भिखारी नहीं थे।"[39]

प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर ने कबीरदास को भिखारी के रूप में चित्रित करते हुए समस्या को चित्रित किया है। कबीर लाहौर पाकिस्तान की जामिया मस्जिद के बाहर भीख माँगता है तो कभी माऊंट मेरी चर्च और महालक्ष्मी मन्दिर की भिखारियों की कतार में भी भीख माँगता है, कभी वह साउथ अफ्रीका के ब्युनेस आयर्स के चर्च सामने खड़ा होता है तो कभी बांद्रा में। मतलब कबीर उन सबका प्रतिनिधि है। मतलब जहाँ - जहाँ उपनिवेशवादियों का संचर्लन (भिखारियोंका) वहाँ - वहाँ भिखमँगो की नस्ल दिखाई देगी। कबीर कहता है कि "मुझे खुशी है कि अब मेरे जैसा एक मजमूल आदमी ही भिखमंगा नहीं है, बल्कि अब अफ्रिका लैटिन अमरीका, कम्बोदिया, इंदोनेशिया जैसे पचासों मुल्क हमारी जयात में आ मिले है . . . हमारी नागरिकता अब आंतरराष्ट्रीय हो गयी है। ये देश अन्तराष्ट्रीय मुद्रा और विश्व बैंक से भीख मांगते है।"[40]

प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर इस प्रकार की आर्थिक समस्याओंका चित्रण किया है।

5.2.4 धार्मिक समस्या

धर्म जिसे धारण किया जाता है। अर्थात मनुष्य के लिए धर्म एक साधन हैं साध्य नहीं। धर्म के बारे में राधाकृष्णन ने कहा है " जब तक मनुष्य पर धर्म का प्रभाव रहा, समाज में अशिक्षा और अंधविश्वासों के रहते हुए भी आज की अपेक्षा अधिक शांति और सद्भावना थी। लेकिन जो ज्ञान की वृद्धि हुई धर्म का अनादर बढ़ा। समाज में अशांति की वृद्धि होती गई।"[41] अर्थात धर्म को अधिक महत्त्व मिलने के कारण अधिक समस्याएँ निर्माण हो रही है।

पाश्चात्य विचारवंत क्रोंचे ने धर्म को पौराणिक अंधविश्वास बताया है तो लेनिन ने धर्म को पतनशील समाज का नशा बताया है। इस का तात्पर्य यह है कि धर्म ने समाज में संकट पैदा किए है। भारतीय समाज संवेदनशील है। धर्म के नाम पर अनेक युद्ध खेले गए हैं। हिंदुस्तान का बँटवारा धार्मिक न्याय, स्वंतत्रता आदि समस्या धर्म के कारण निर्माण हो गयी है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने निम्नलिखित धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया है।

5.2.4.1 जाति तथा वर्ग भेद

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने जाति तथा वर्गभेद की समस्या पर प्रकाश डाला है।

आर्य लोग जब खैबर घाटी को पार करके उत्तर-पश्चिमी भारत के मैदानी प्रदेश में आए तो सर्वप्रथम ये सिंधुनदी के तटीय प्रेदश में बस गए। अपने इस नए भारतीय उप-निवेश का नाम उन्होंने सिंधु देश रखा। जिसे आगे हिंदु -देश या हिंदुस्तान कहा जाने लगा। इसी आर्यों ने जाति तथा वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रचलन किया। आर्यो का मानना था कि, "तेजस्वी ब्रह्मा ने इस संपूर्ण सृष्टि की रक्षा के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र

अलग-अलग वर्णों की सृष्टि की। वेद पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, दान देना और लेना इन कर्मो के लिए ब्राह्मणों को बनाया। प्रजा तथा दुखियों की रक्षा करना, वेद पढ़ना आदि कार्यो को क्षत्रियों के लिए बनाया। पशुओं की रक्षा, पालन-पोषण, क्रय-विक्रय करना व्यापार करना, वेद पढ़ना आदि कर्मों को वैश्यों के लिए बनाया। शुद्रों के लिए तीनों वर्गों की सेवा करना ही प्रधान कर्म बन गया। ब्राह्मण को ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न होने से, तीनों वर्णो में जेष्ठ होने से और वेद के धारण करने से संपूर्ण सृष्टि का स्वामी माना गया। शुद्र को निरंतर अधीनता की अवस्था में रखा गया। सतयुग में इसी समस्या के कारण अयोध्या पति राजा राम ने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए और ब्राह्मण धर्म की रक्षा के लिए शुद्र वंशी शंबूक जैसे ऋषि और तपस्वी की गर्दन काट कर धड़ से अलग कर दी क्योंकि शंबूक मोक्ष प्राप्त करने के लिए साधना कर रहा था।

इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में जाति तथा वर्गभेद की समस्या पर प्रकाश डाला है।

5.2.4.2 ब्राह्मणवाद

धर्म की दृष्टि से क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र इन तीनों वर्गो से श्रेष्ठ ब्राह्मण माने जाते थे। क्योंकि वे अपने-आपको ब्रह्मा के मुख से पैदा होने के सिद्धांत को मानते थे। वेदों का पठन करना, ज्ञान देना, यज्ञ करना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य इस वर्ग के अतंर्गत किए जाते थे। इसीलिए अन्य तीनों वर्गो से इनका जीवन सुखपूर्ण था। तीनों वर्णों के अलावा ये धन,धान्य से संपन्न थे। मगर समाज में मिलते हुए रूतबें और ओहदे का ब्राह्मणों ने गलत प्रयोग किया। इसीकारण लोगों का इन इनसे विश्वास तुट गया। और ब्राह्मणवाद एक समस्या बन गई।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने कहा है कि हर सभ्यता हर धर्म में ब्राह्मणवाद पैदा हुआ। भारत में तो वह देर से आया पर मिस्त्र की सभ्यता में पुरोहितवाद और ब्राह्मणवाद पैदा हुआ। "मिस्त्र में भी देवताओं के नामपर जो प्रसाद चढ़ाया जाता था, वह वहाँ के मंदिरों के पुजारियों के पेट में जाता था। वे पुजारी उन मंदिरों में वैभव से रहते थे। वे श्रम, फौजी सेवा और करों से मुक्त थे। ये पुरोहित पुजारी और ब्राह्मण ही

मिस्त्र की सभ्यता के पतन का कारण बने,।"[42] ब्राह्मणवाद पर प्रहार करते हुए सलमा अदीब से कहती है कि तुम्हारे ब्राह्मण और उनके ग्रंथों ने माँ की कोख का अपमान करते हुए मनुष्य को ब्रह्मा के अलग-अलग अंगों से पैदा करने का सिद्धांत रखा है। और इनके ग्रंथ ब्राह्मणवादी अत्याचारों, वर्णवादी अनाचारों और ईश्वरवादी आस्था को स्थापित करनेवाले पश्चाताप के ग्रंथ हैं। ब्राह्मणों की स्वार्थी वृत्ति पर प्रकाश डालते हुए कमलेश्वर ने सुमेरियन संस्कृति को चित्रित किया है, सुमेरियन संस्कृति के ब्राह्मणों ने मृतकों और आत्माओं के लिए पिरामिड नहीं बनाए। बल्कि देवताओं के नाम पर अपने लिए मंदिरों का निर्माण किया। स्वार्थी ब्राह्मणों के कारण उस सभ्यता का विनाश हुआ। और वही बेबीलोनियन सभ्यता ने जन्म लिया। लेकिन बेबेलोनिया की सभ्यता में भी कुलीनता का दंभ पैदा हुआ, उसमें भी अलिखित वर्ण बनते गए।

पर बेबोलिनिया सभ्यता जी नहीं सकी, क्योंकि "इनमें कुलीनता के नाम पर उन लोगों का उदय हुआ जो मंदिर पुराण और पवित्रता के नाम पर स्वंय को पुरोहित पुकारते थे। ये पुरोहित असल ब्राह्मण थे, जो जातीय नहीं-स्वार्थ केंद्रित कुलीनता और ब्राह्मणवाद के प्रतीक थे।"[43]

इसी तरह ब्राह्मणवाद की समस्या से निर्मित अन्य समस्याओं को उपन्यास में चित्रित किया है।

5.2.4.3 वर्णवाद

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने वर्णवाद की समस्या पर प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि वैदिक आर्यो ने अपने स्वार्थ के लिए समाज विभाजित कर दिया। वैदिक आर्यो के वर्णवाद और ब्राह्मणवाद ने अन्य वर्गों को अपनी सभ्यता में शरणार्थी बना दिया है। "आर्यें का वर्णवाद अप्राकृतिक सिद्धांत है, क्योंकि ब्राह्मणों की पत्नियों को भी मासिक धर्म के चक्र से गुजरना पड़ता हैं। वे भी गर्भवती होती हैं। वे भी बच्चों को जन्म देती हैं उन्हे दूध पिलाती हैं उनका पालन पोषण करती हैं इतने पर भी वह आर्य ब्राह्मण जिनका जन्म स्त्रियों की कोख से होता है यह दावा करते हैं कि वे ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए हैं। इसीलिए वे आर्यों के इस दैवी विधान का विरोध करते हैं।

वर्णवाद के साथ-साथ कमलेश्वर समाज में प्रचलित मिथ्या आड़बरों का विरोध करते हैं हुए वे लिखते हैं , "हम ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार करते हैं। पुनर्जन्म के मनुष्य विरोधी आकर्षक सिद्धांत को नामंजूर करते हैं। हम आर्यों के उपनिषदों के निर्गुण ब्रह्म की कल्पना बेकार और व्यर्थ समझते हैं। यह उपनिषद ब्राह्मण ग्रंथों के बाद लिखे गए आर्य धूर्तता ग्रंथ हैं।

यह कर्मकांड़ी पुरोहित हमारे लिए आवश्यक नहीं है। पुर्नजन्म मिथ्या है। . . . किसी के भीतर से कोई देवत्ता नहीं बोल सकता। देवता का अस्तित्व नहीं है। देवता और उनके ग्रंथ दासता के परिसूचक हैं।

इस प्रकार क मलेश्वर ने वर्णवाद और मिथ्या आड़बरों से निर्मित समस्याओं को चित्रित किया है।

5.2.4.4 ईसाई धर्म का प्रचार

उन्नीसवीं सदी के भारत की महान् विशेषता पुनर्जागरण आंदोलन है। इससे भारतीय इतिहास में एक नए युग का प्रारंभ होता है। उस समय समाज में सति प्रथा, जाति प्रथा, बालविवाह, पर्दाप्रथा मुर्ति पूजा, बहुदेववाद की उपासना और विधवा विवाह निषेध आदि बुराइयां विद्यमान थी। धर्म में अनेक प्रकार के आड़ंबरों एंव कर्मकांड़ों का प्रवेश हो चुका था। उस समय धार्मिक स्थिति अच्छी नहीं थी। क्योंकि ईसाई धर्म के प्रचार के कारण लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो रहा था। और हिन्दू धर्म से आस्था हटती जा रही थी। अंग्रेज सरकार ने भारत में इसाई धर्म प्रचार के लिए काफी धन व्यय किया। लोगों को नौकरी का प्रलोभन तथा अन्य प्रलोभन देकर ईसाई बनाया।

इसी तरह धर्मांतरण करनेवालों की संख्या बढ़ती गई और हिंदु धर्म के विचारों की आँखें खुल गई। इस समस्या से निपटने के लिए और धर्म के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आर्य समाज की स्थापना की। और हिंदू धर्म का प्रचार और प्रसार जोरों से शुरू किया गया।

5.2.4.5 धार्मिक कठोरता

धर्म को अधिक उँचा समझने से यह समस्या निर्माण हो रही है। जिस भगवान ने इस सृष्टि का निर्माण किया, उस भगवान को ही मानव ने धार्मिक बंधनों में जखड़ रखा है। समाज का प्रबोधन करनेवाले महात्माओं को भी इस बंधन में बांधकर उनके कार्य को मर्यादित कर देने का काम हमने किया। इसीलिए वर्तमान समाज में यह समस्या बढ़ रही है। धर्म को श्रेष्ठ बनाने के कारण इसमें कठोरता आई है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में इस समस्या पर कमलेश्वर ने प्रकाश डाला है। सलमा अदीब से कहती है कि आजादी के आंदोलन के वक्त मुस्लिमों का दिमाग संदेहग्रस्त बन गया था। क्योंकि "लोकमान्य तिलक ने आजादी के आंदोलन को गणपति उत्सव से जोड़ कर इसे आजादी का हिंदू आंदोलन बना दिया था।"[44] धर्म को अधिक उँचा समझने के कारण सावरकर जैसे क्रांतिकारी हिंदूवादी बन गए। गांधी, नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद के रहते हुए भी मुसलमानों के लिए उम्मिद बची नहीं थी। इसीलिए शायर इकबाल ने भी "सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" इस राष्ट्रगीत को बदल कर 'चीनो -अरब हमारा, हिंदूस्तां हमारा, मुस्लिम हैं हम वतन हैं, सारा जहाँ हमारा।' इस प्रकार कर दिया। स्वंतत्रता पूर्व ही हिंदू -मुस्लिमों में धार्मिक कठोरता शुरू हो गई।

धर्म को अधिक महत्त्व देने के कारण शायर इकबाल ने 'पाकिस्तान' की माँग की। अनपढ़ तथा गरीब मुसलमानों में 'इस्लाम खतरे में है की भावना को दिलों-दिमाग में बिठा दिया। परिणाम स्वरूप खून का दरिया बहाया गया। मुसलमान अपने आपको कट्टर बनाने की जी तोड़ कोशिश करने लगे। और उनका खुदा सिर्फ मुसलमानों का खुद बन गया। कमलेश्वर ने लिखा है कि "इकबाल ने खून का दरिया बहाया . . . क्योंकि उसने खुदा को सिर्फ 'मुसलमानों का खुदा' बनाकर रख दिया। इकबाल से पहले खुदा सबका था, हिंदू का था मुसलमान का था . . . मीर का था कबीर का था, नानक और टैगोर तथा, सुब्रमण्यम भारती और नजरूल इस्लाम का था, संतरैदास और ज्ञानेश्वर का था, वह किसका खुदा नहीं था, लेकिन इकबाल ने खुदा को मस्जिदों में कैद कर देने का पाप किया है।"[45]

इसी तरह धार्मिक कठोरता के कारण भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान का निर्माण हुआ।

5.2.4.6 धर्मातरंण

प्राय: सामान्य प्रचलित अर्थ में धर्म परिवर्तन का अर्थ एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को ग्रहण करने से लिया जाता है। "धर्म परिवर्तन का अर्थ है अभी तक स्वीकृत धर्म का परित्याग करके किसी अन्य धर्म को स्वीकार कर लेना। जब कोई व्यक्ति या समुदाय अपने पूर्व धर्म को छोड़कर किसी भी कारण से दूसरे धार्मिक मत अथवा धर्म को स्वीकार कर लेता है तो उसकी इस क्रिया को 'धर्म-परिवर्तन' की संज्ञा दी जाती है। इसे ही धर्मांतरण की संज्ञा दी जाती है।"[46] व्यापक दृष्टि से विचार करते हुए कुछ धर्म दार्शनिक अपने ही धर्म में किसी एक मत या संप्रदाय को छोड़कर दूसरे मत या संप्रदाय के स्वीकार करने को भी धर्म परिवर्तन की संज्ञा देते हैं।

धर्म-परिवर्तन के विश्व के अनेक देशों में अनेक उदाहरण प्राप्त होता है। भारतवर्ष में ही समय-समय पर अनेक धर्मों को ग्रहण करने का उदाहरण देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म और जैन के स्थापित होने के उपरांत अनेक हिंदुओं ने बौद्ध धर्म या जैन धर्म स्वीकार किया। धर्मप्रचार के कारण बौद्धों ने अनेक धर्मों के लोगों को चीन, जापान लंका के वासियों को बौद्ध धर्म में दीक्षा दी है। इसी प्रकार कालातंर में अनेक बौद्धों ने भी हिंदू धर्म को स्वीकार किया।

किंतू बलात् धर्म परिवर्तन भारतवर्ष के लिए एक समस्या है। भारत की राष्ट्रीय एकता, अखंड़ता, सामाजिक समरसता, धार्मिक सौहार्द एंव सामाजिक सुदृढ़ता के लिए धर्मातंरण अभिशाप सिद्ध हुआ है। वैसे धर्मातंरण के दो प्रकार माने जाते हैं - व्यक्ति गत एवं सामूहिक। सामूहिक धर्म परिवर्तन अधिक खतरनाक साबित होते हैं। उपन्यास में दोनों प्रकारों का समावेश किया है। व्यक्तिगत धर्मांतरण के अंतर्गत बुटासिंह, विद्या आदि आते हैं। जेनिब को पाने के लिए बुटासिंह राजस्थान की सीमा पार करके पाकिस्तान में दाखिल होता है। उसने कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया अपना नाम जमील अहमद मंजूर किया और बेटी का नाम तनवीर कौर से सुलताना रखा। मगर जेनिब

के घरवालों ने उसका मुसलमानत्व मंजूर नहीं किया। मुसलमान होने जीने के बावजूद भी अदालत में मुकदमा हार जाने के बाद जमील अहमद उर्फ बुटासिंह ने अपनी बेटी के साथ ट्रेन के सामने कुदकर खुदकुशी की।

सांप्रदायिक दंगो में विद्या की आँखों के सामने माता,पिता, भाई को मार डाला गया। अनाथ बनी विद्या को मुसलमान परिवार सैय्यद सिराज ने सहारा दिया, जो पाकिस्तान जा रहा था। वहाँ पहुँचने के बाद "बेगम सकैया सिराज ने मौलवी को बुलाकर, कलमा पढ़वाया और विद्या का माथा-चूमकर उसका बहुत ही खूबसूरत -नाम रख दिया-परी ! परवीन सुलताना ! ।"[47] इसी तरह व्यक्तिगत धर्मांतंरण उदाहरण उपन्यास में आये हैं।

सत्रहवी सदी के दौर में धर्मांतरण को इतना महत्त्व नहीं दिया गया था। इस दौर के नायक धर्मांतरण करना मतलब जंग में घायाल हुए घोड़े को बदलना जितना आसान है उतना ही धर्मांतरण करना मानते है। औरंगजेब के राजा बनते ही धार्मिक कट्टरता आ गई। औरंगजेब के कालखंड़ में हिंदुओं को सताया गया, धार्मिक स्थलों को तहस-नहस कर दिया, मंदिरों को तोड़ कर मस्जिदे बनवायी गई बलपूर्वक, जोर जबरदस्ती, तलवार की नोक पर बंदूक के डर से, प्रलोभन देकर किसी व्यक्ति या समूह को अपना धर्म छोड़कर किसी एक विशेष धर्म को स्वीकार करने के लिए विवश किया जाता था। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में मोहम्मद-बिन-कासिम का बयाना दर्ज किया है - "मैं बाअदब कहना चाहता हूँ कि मैं अरब हूँ। मेरे कबीले का मालिक हज्जाज था। . . हमारा कबीला नया-नया मुसलमान बना था। सिर्फ यह मालूम था कि मजहब को मंजूर किया जाता है।"[48] मुसलमान बने मोहम्मद बिन-कासिम ने धन के लिए मंदिरों को तोड़ा। तक्षशिला से लेकर कांगडा तक वह जीतता चला गया और अपना साम्राज्य विस्तार किया।

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर ने धर्मांतरण की समस्या को चित्रित करते हुए व्यक्ति गत और सर्वाजनिक धर्मांतरण के प्रकारों पर भी प्रकाश डाला है।

5.2.4.7 रूढ़ि परंपरा

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने रूढ़ि तथा समाज में प्रचलित परंपराओं पर प्रकाश डाला है। वेसे हर संस्कृति में रूढ़ि परंपराएँ समाज के लिए बाधक सिद्ध होती है। जैसे विधवा पुर्न:विवाह को शासन ने मान्यता दी है लेकिन रूढ़ि पंरपराओं में अटका समाज इसे जल्दी स्वीकृत करता है ऐसा दिखाई नहीं देता। नारी शोषण के लिए रूढ़ि परंपरा भी कारणीभूत है। कमलेश्वर ने अजटेक और इन्का सभ्यता में प्रचलित रूढ़ि परंपराओं का चित्रण किया है।

स्पेनी इतिहासकार बर्नेल डियाज का अजटेक इन्का सभ्यता के बारे में कहना है कि "इनकी सभ्यता के देवता नरबलि मंजूर करते थे और यह लोग खुद नरभक्षी थे।" इसका मतलब अजटेक सभ्यता में देवत्ताओ को प्रसन्न करने के लिए मानव की बलि चढाई जाती थी।

इसका खंड़न करते हुए सम्राट मोंतेजुमो कहते हैं कि "हम अजटेक और इनका सभ्यता के नागरिक अपने गणचिह्नों और देवत्ताओं को बताने के लिए प्रतिबद्ध थे कि हमने जीवित रहने के लिए कितनी पशु हत्या की है . . . इसीलिए हम पशुओं की बलि अपने देवताओं के सामने देते हैं .. जिसे तुम नरबलि कह रहे हो वह पशुबलि थी . . . हम अपने मंदिरों में बलि देकर माँस को दवताओं के अनुग्रह के रूप में ग्रहण करते थे।"[49] रूढ़ि परंपराओं के कारण और देवत्ताओं के नाम पर पशुबलि देना एक घिनौना कृत्य है।

फ्रांसिसको पिजारो ने अनपढ़ निरक्षर, आदिवासीयों को 'ईश्वर' बनकर दक्षिण अमरिका में छला था। उसी प्रकार हटनांदो कोर्टेस ने अजटेक सभ्यता के नागरिकों को अपने आपको 'ईश्वर' मानकर उनकी धार्मिक्र विश्वासों रीति-रिवाजों तथा सनातन विश्वासों का फायदा उठाकर छला था। इसी तरह कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में धार्मिक समस्याओंका चित्रण किया है।

5.2.5 साहित्यिक समस्या

स्वंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के सामाजिक, राजनीतिक,आर्थिक,धार्मिक क्षेत्र में अनेक विसंगतियाँ दिखाई दी, वहाँ साहित्य और

साहित्यकार भी अपने आपको बचा न सका । आज साहित्यकार के अंदर अनेक शुद्र भावनाएँ जागृत हुई है, जिन्होंने उसे स्वार्थी बनाया। आज का साहित्यकार अपने आपको व्यक्ति गत स्वार्थो की सीमा में बाँधकर अपना या अपने निकट के कुछ साथियों का गुट बना लेता हैं। साहित्य जगत् में अवसरवादिता, गुटबंदी और मुखौटे बाजी घुस बैठी। जीवन की अनास्था और अविश्वास ने उनके साहित्य में भी अनास्था, अविश्वास और कुंठा को जन्म दिया। साहित्यकार पैसे का गुलाम बन गया। वे साहित्य में यर्थाथवादी लेखन नहीं चाहते,तो वे आज भी कल्पना जगत् में भटकते रहते हैं। वर्तमान साहित्यकार पैसा कमाने के लिए चमक-धमकवाला आरश्लिलता प्रधान साहित्य लिख रहे हैं।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास नें कमलेश्वर ने साहित्य में आनेवाली समस्यों पर प्रकाश डाला है।

5.2.5.1 राजाश्रित इतिहासकार

सत्रहवी सदी में उत्तराधिकार युद्ध के बाद औरंगजेब हिंदुस्तान का बादशाह बना। इससे पूर्व अकबर के कालखंड में सभी ललित कलाओं को संरक्षण प्राप्त हुआ था। स्थापत्य कला में हिन्दू-मुस्लिम दोनों कला-शैलियों का सुदंर समन्वय हुआ था। संगीत कला क्षेत्र में भी अकबर ने समन्वय नीति को अपनाया। साहित्य के क्षेत्र में भी उत्कर्ष हो रहा था। रहीम अब्दुल फजल गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, केशवदास आदि इसी युग की देन है। अब्दुल फजल ने 'अकबर नामा' और आइने-ए-अकबरी की रचना की । निजामुद्दीन अहमद की 'तबकात-ए-अकबरी' गुलबदन बेगम का 'हुमायुँनामा' बाबर का 'बाबरनामा' और बदायूँनी का 'मुन्तखब-उत-तवारीख' आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं तथा इसी युग की देन है।

अकबर के कालखंड में दरबारी इतिहासकारों की परंपरा थी । ये इतिहासकार स्वंतत्र थे। युद्ध का हु-ब-हू वर्णन उनके इतिहास में मिलता था। इन पर राजाओं का जोर नहीं था। तथा वे किसी के दबाव में आकर इतिहास को दबा नहीं देते थे। किन्तु औरंगजेब के कालखंड तक ये स्थितियाँ बदल गयी। राज्यश्रित इतिहासकार होने के कारण 'राजा ' को खूश करना तथा उसका ही गुणगाण करना और हर सभंव तरिके से राजा

को वीर, धर्मरक्षक, देशप्रेमी आदि के रूप में चित्रित करना इतिहासकारों का उद्देश्य रहा है। "ये सारे इतिहासकार दरबारी इतिहासकार हैं . . . ये न सोचने के लिए आजाद थे न लिखने के लिए। राज्याश्रय में जो कुछ लिखा जा सकता है, या जो लिखाया जाता है, वही इन्होंने दर्ज किया है।" औरंगजेब के राज्यश्रित इतिहासकारा में काजिम सीराजी, मुहम्मद साकी मुस्ताद खान, खाफी खान, और वकात-ए-आलमगिरी के लेखक आकिल खाँ, शिबली नोमानी आदि हैं। सवाल ये उठ खड़ा होता है कि क्या हम इन के लिखे हुए इतिहास पर विश्वास करें ? इस बारे में राव छत्रसाल बुंदला, जिसने बीस बरस औरंगजेब से लोहा लिया था उनका कहना है कि "इनके इतिहासकारों पर भरोसा मत कीजिए। आलमगीर-नामा, माथिरे-आलमगिरी, मुंतखाबुल-लुबाब और वकाते-ए-आलमगीरी- यह सारे इतिहास इसके जरखरीद गुलामों ने लिखे हैं। ये इतिहास भरोसेमंद नहीं है।"[50] औरंगजेब के जमाने में जो भी इतिहास लिखे गए, उनमें वही सब लिखा गया जो औरंगजेब ने चाहा। औरंगजेब की धर्मांधता को छिपाने के लिए लखनऊ के मुसलमान साहित्यिक ने यह लिखा कि काशी विश्वनाथ के मंदिर के तहखाने में लुट और बलात्कार की घटनाएँ घटी थी। इसीलिए औरंगजेब ने उस मंदिर को तोड़ दिया। लेकिन इस घटना को प्रमाणित बनाने के लिए इतिहास कोई मदद नहीं देता। इस प्रकार के इतिहासकारों की वजह से सच्चा इतिहास धुंधला हो गया है। कमलेश्वर ने कहा है कि "किताबों में जो इतिहास लिखा या लिखवाया जाता है . . . और साक्षातकारों में दर्ज कराया जाता है . . . पेशेवर कलम घिस्सुओं द्वारा जिस तरह के तथ्यों के सहारे दस्तावेजी इतिहास बनाया जाता है, वह इतिहास नहीं होता।"[51]

औरंगजेब के जल्लाद ने कोट पिधौरा के किताबों के गोदाम तहस नहस कर दिये थे। उन्हें जलाया था। लेकिन अदीब का कहना है कि "कोई किताब मरती नहीं . . . वह भी सिर्फ चोला बदल देती है, जिन किताबों को तूने फाड़ा और जलाया था, उनके विचार सफेद कबूतरों की शक्ल में उड़ गए थे।"[52] राज्यश्रित इतिहासकारों ने औरंगजेब का गुणगाण करते हुए लिखा है कि सारी तवारीयों बताती है कि औरंगजेब से बडा मुसलमान बादशाह दुनिया में नहीं हुआ किताबों में लिखा है कि उसने दिन के लिए अपनी जिंदगी सौंप दी किताबों में यह भी लिखा है कि आलमगीर ने तैमूरी खानदान की

अजमत में चार चाँद लगाए। राज्यश्रित इतिहासकारों के साथ-साथ कमलेश्वर ने ब्रिटिश इतिहासकारों (साहित्यिकों) पर प्रकाश डाला है।

5.2.5.2 अंग्रेजी साहित्यिक

सन् 1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों की नीति बदली थी। उन्होंने वतन को मजहब के नाम पर तक्सीम करना शुरू कर दिया था। अंग्रेजी अफसर कनिं धम, जिसे हिंदुस्तान की तवारीख और पुरानी इमारतों की देखभाल करने का काम सपुर्द किया गया था, उसने चालाकी से लखनऊ गजेटियर में यह दर्ज किया कि "बाबरी मस्जिद की तामीर के दौरान हिंदुओं ने तामीर होती मस्जिद पर हमला किया था और उस जंग में मुसलमानों ने एक लाख चौहत्तर हजार हिंदुओं को हलाक किया था . . . उन्हीं हिंदुओं का खून से मस्जिद के लिए गारा बनाया गया था . . . ।"[53]

इसके पिछे ब्रिटिशों की साजिश नजर आती है। वे हिंदू-मुस्लिम दोनों को आपस में लड़ाकर खुद यहाँ के सत्ताधिश बनना चाहते थे। सन् 1857 में जो विद्रोह हुआ था, ऐसा विद्रोह फिर कभी ना हो, इसीलिए इन दो सांप्रदयों में आपसी फूट डालना ही ब्रिटिशोने महत्त्वपूर्ण समझा था। अंग्रेज गजेटियर लेखक एच.आर.नेविल ने तो यह साफ-साफ लिखा है कि बाबर ने ही राम मंदिर तोड़ा है सन् 1528 की गर्मियों यानी अप्रैल और अगस्त के बीच बाबर अयोध्या पहुँचे, वहाँ एक हफ्ते रूके और वहाँ प्राचीन राम मंदिर तोड़ने का आदेश दिया और वहाँ मस्जिद तामीर करवाई। जिसे बाबरी मस्जिद कहा जाता है।

लेकिन गुलबदन ने लिखा हुआ 'हुमायूँनामा' में बाबर गर्मियों के इन दिनों में अपने परिवार सह आगरा सिकरी आदि जगहों पर रहने का जिक्र हुआ है। मतलब यह अंग्रेजों की चली हुई एक घटिया चाल थी, जिससे फूट का बीज बोया गया। बाबर तो क्रुर और रक्त पिपासु नहीं था। उनके बारे में डॉ. श्रीराम शर्मा ने लिखा है कि "ऐसा कोई सबूत नहीं है कि उसने (बाबर) धर्म के आधार पर कभी भी हिन्दू मंदिर को नष्ट किया हो अथवा हिंदुओं पर अत्याचार किया हो।"[54]

साहित्य में समाज का प्रतिबिंब दिखाई देता है। और समाज का पथप्रदर्शन करने का कार्य भी साहित्य करता है। मगर आज का साहित्यिक पैसों का गुलाम बन गया है। साहित्य के प्रयोजन सिर्फ 'धन' ही बन गया है, स्वान्तसुखाय नहीं। इसी कारण धन के लिए साहित्यिक सच्चाई का गला घोंटकर झूठ का साथ देते है। और समाज का पथ प्रदर्शन करने के बजाय उसे विनाश के गर्त में ले जाते हैं। कमलेश्वर ने लिखा है कि " शब्दों से बहते रक्त और पसीने को पोंछकर आपने उन्हे कुलीन बना लिया है . . . आपने सडती लाशों, रक्त और पसीने की गंध को दुर्गंध बताकर शब्दों के परफ्युम से हत्याकांडों और सभ्यताओं के विनाश को अपने इतिहास की किताबों के लिए खुशबूदार बना लिया है।"

इस तरह कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में साहित्यिक समस्या के अतंर्गत राज्यश्रित इतिहासकार और अंग्रेज इतिहासकार और उनके कारण साहित्य को कंलकित अवस्था को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है और सत्य पर प्रकाश डालने की कोशिश।

5.2.6 वैज्ञानिक समस्या

मनुष्य ने शिक्षा, आरोग्य, खगोल, राज्य, समाज विज्ञान (रसायन, वनस्पति, भौतिक, जीव आदि) मानसशास्त्र इत्यादि शास्त्रों द्वारा शास्त्र रूप में ज्ञान-भांडार खोल दिया। मानव ने अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत ऊँची छलाँग लगाई। आज नित्य कई अनुसंधान होते है। संशोधकों का इतना बड़ा क्षेत्र है कि वे कभी मंगल तो कभी शुक्र पर पहुँच जाते हैं। पृथ्वी का गोला उनके पैरों का मानो फुटबॉल बन गया है। मानव की उड़ान चंद्रमा पर गयी है। कल कहाँ जायेगी यह कोई कह नहीं सकता ? इसीलिए तो आज का युग विज्ञान युग है। फिर भी यह बात निश्चित है विज्ञान में ब्रह्मा की सृष्टि की पुन: रचना करने की शक्ति है, विष्णु की तरह पालन पोषण की और महेश की तरह संहार करने की शक्ति शास्त्रज्ञों में आ गयी है। यह सच है कि विज्ञान शाप नहीं है। बल्कि एक वरदान है। किन्तु अनुसंधान के नतीजों को गुप्त रखना चाहिए यदि यह नतीजे सत्तालोलुप, स्वार्थी और धूर्तों के हाथों में पड़ गए तो मानवता का महाविनाश ही हो सकता है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने वैज्ञानिक समस्या को चित्रित किया है। "मानवता के इतिहास का यह घोर अंधकार काल था . . . दूसरों को मौत देने के लिए अमरिका जर्मनी, इंग्लैंड, और इसके तमाम वैज्ञानिक मृत्यु के अन्वेषण में जुट गए थे. . . वे तानाशाहों के हाथों में मृत्यु के कारगर औजार सौंप कर विज्ञान की प्रगतिवादी अवधारणा का तर्क देते हुए अपनी पदवियाँ और वैयक्तिक सुविधाएँ बटोर रहे थे।"[55]

इनमें भौतिक विज्ञानी वॉन वीजसाकर, वर्नर हाइजनबर्ग, एडवर्ड टेलर, राबर्ट ओपनहायमर, रूदरफोर्ड, रबी, एनरिको फर्मी, लियोजिलार्ड, नील्स बोहरू, रूडोल्फ पील्र्स, और आइंस्टीन आदि थे। वैज्ञानिकों का यह कुनबा विराट मानवता के हित के लिए प्रकृति के रहस्यों को अनावृत्त करने में लगा था। मारी क्यूरी ने रेडियम का अवष्किार संपन्न किया था। अपने समकालीन भौतिकी विज्ञानी अर्नेस्ट रूदर फोर्ड के लिए क्युरी ने कहा था- "रूदर फोर्ड ऐसे अकेले भौतिक शास्त्री हैं जो अपने वैज्ञानिक अनुसंधानों से मानव जाति को जीवन के बेमिसाल उपहारों से मालामाल कर सकते है।"[56]

अर्नेस्ट रूदर फोर्ड ने अपनी प्रयोगशाला में अजस्त्र उर्जावाले अणु का अनुसंधान कर लिया था। उन्होंने अणु को विखंडित कर लिया था, अणु के केंद्रक-न्यूक्लियस के रहस्स का पता लगा लिया था, जो अणु से बीस हजार गुणा छोटा और सुक्ष्म था, परंतु अपनी उर्जा-शक्ति मं अणु से सहस्त्र गुना अधिक संपन्न और शक्तिशाली था। अणु को विखंडित करने का रहस्य प्राप्त कर लेने के बाद रूपद फोर्ड उदास हो गया था। उसने अपने फ्रासीसी मित्र क्यूरी दम्पति से कहा था - " हमें इस अनुसंधान के नतीजों को गुप्त रखना चाहिए, यदि यह धूर्तों के हाथों में पड़ गया तो प्रकृति की शक्ति का यह सत्य मानवता के महाविनाश का कारण बन सकता है।"[57]

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान हिटलर मुसोलिनी तोजो आदि का उदय हुआ। इनकी अघोरी महत्त्वकांक्षांओं ने सारे युरोप में हलचल पैदा की थी। इटली की सत्ता मुसोलिनी ने हासिल की तो नस्लवादी नफरत और अंध राष्ट्रीयता ने जर्मनी को हिटलर दे दिया। तानाशाह बेनितो मुसोलिनी की फौजें इथोपिया पर कब्जा करके रूक गई।

हिटलर की फौजें राजनलैंड, आस्ट्रिया, और पोलैण्ड को रौंद कर खड़ी हो गई। हिटलरने आर्य-श्रेष्ठता के दंभ में यहूदी वैज्ञानिकों का तिरस्कार किया था। और अपने महाविनाश के लिए महामार्ग प्रशस्त कर दिया था क्योंकि लगभग सभी वैज्ञानिक यहूदी थे।

यहूदियों का कुचला हुआ अहं प्रतिशोध माँगने लगा था। लोस अलमोस की "प्रयोग शालाओं में साधना करने वाले ऋषियों की आकृतियाँ बदल रही थी। वे तंत्रसाधना करनेवाले राक्षसों में विरूपित हो रहे थे . . .।" वही शुरू हुआ अनुसंधान- "पदार्थ के गर्भ में अपनी संपूर्ण सत्ता के साथ उपस्थित अणु, अणु में मौजुद उसका और भी शक्ति शाली केंद्रक-न्यूक्लियस, उसकी नाभी में संचित अजस्त्र उर्जा का स्त्रोत, विंखडन की श्रृंखलाबद्धता का रहस्य जो पृथ्वी को सैकडों सूर्यो का प्रकाश और प्रत्येक भौतिक उपकरण को सदियों सक्रिय रहने की उर्जा दे सकता था .. अजस्त्र उर्जा के उस स्त्रोत की दिशा शुभ से अशुभ की ओर बदल दी गई।"[58]

सन् 16 जुलाई 1945 को सुबह चार बजे मैक्सीको के अलामागोर्दो के रेगिस्तान में अणुबम का पहला सफल परिक्षण लिया गया। इस सफलता को देखकर ओपनहाइमर को संस्कृत का एक उद्धरण याद आया - "मैं ही मृत्यु हूँ। और मैं ही जीवन . . अब मैं मृत्यु -रूप में अवतरित हुआ हूँ . . . पृथ्वी के विध्वंस के लिए .. मैं ही मृत्यु हूँ . . .।"[59]

युद्ध का जूनुन कुछ भी करवा सकता है। इसीलिए वीज साँकर और हाइजनवर्ग जर्मनी के लिए बम बनाने का प्रयास कर रहे थे। उधर लोसं-अलामोस की प्रयोगशाला में ओपनहाइमर जॉन मैनली, टेलॅर और फर्मी ये वैज्ञानिक परमाणु और हायड्रोजन बम बना रहे थे जो कि सृष्टि संहारक थे। मतलब अणुबम के सफल परीक्षण के बाद अब युध्द में रत राजनीतिक सत्ताएँ मौत का उत्पादन करना चाहती थी।

दूसरे मगर विश्व युद्ध में एटमी हमले का कोई कारण और औचित्य नहीं था क्योंकि भूमध्यसागर में मुसोलिनी ध्वस्त हो चुका था। सोवियत सेनाओं के सामने हिटलर और उसका बर्लिन घुटने टेक चुका था, और जापान भी समर्पण के लिए तैयार था। फिर भी अमरिका ने एटमी हमले किये जब कि उनका लक्ष्य जर्मनी था लेकिन हमले जापान

पर हुए। 16 अगस्त, 1945 को हिरोशिमा और 9 अगस्त 1945 को नागासाकी पर एटमी हमले हुए। एटम बम की तबाही से बेखबर घर लौटनेवाले एक नागरिक ने कहा "घर तो कहीं था ही नहीं . . . हिरोशिमा मेरे पश्चिमी जापान का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन था। न मालूम वह स्टेशन कहाँ अलोप हो गया . . . उत्तर-पूरब और दक्षिण में हरे भरे पहाड और जंगल थे . . न मालूम वे वहाँ अदृश्य हो गए।"[60]

इसीतरह विज्ञान का सहारा लेकर सत्तालोलुप लोगों ने इन्सान को कीडे-मकोड़ो की तरह मार दिया। धरती को बंजर बनाया। आज भी जापान एटमी हमलों के परिणाम भुगत रहा है।

अणुबम बनाने की प्रतियोगिता में कोई भी राष्ट्र अब पिछे नहीं है। मानो उनमें एक होड सी लगी हैं। भारत ने पोखरन में अणुबमों के तीन परीक्षण लिए तो पाकिस्तान ने भी बलुचिस्तान के चगाई में तीन परीक्षण किए। ऐसे ही परीक्षण यदी होते रहेंगे तो शायद जल्दी ही तीसरा विश्वयुद्ध हो सकता है। इसी तरह 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने वैज्ञानिक समस्या को चित्रित करते हुए आज के अणु परीक्षणों से होनेवाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला हैं।

निष्कर्ष

कमलेश्वर जी के अन्य उपन्यासों की तुलना में 'कितने पाकिस्तान' यह उपन्यास आकार-प्रकार में बृहद भी है और बहुआयामी भी। यह उपन्यास कमलेश्वर के सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि बातों का ज्ञान उजागर करनेवाला दस्तावेज है। इस उपन्यास.के अतंर्गत कमलेश्वर ने सामान्य व्यक्ति के सामने खड़ी समस्याओं से लेकर विश्व के सामने खड़ी समस्याओं का चित्रण किया है।

सामाजिक समस्या के अतंर्गत कमलेश्वर ने व्यसनाधिनता, नारिशोषण अनमोल विवाह, संयुक्त परिवार, परित्यक्ता नारी, अतंर्जातीय विवाह, विधवा नारी, मकान, बलात्कारी नारी और अन्य समस्याओंका चित्रण किया है। व्यसनाधिनता आधुनिक युग की फैशन बन गयी है। यह समाज व्यक्ति और राष्ट्र के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही है। साथ में कमलेश्वर ने व्यसनाधिनता को कुलीनता और बड़ी ओहदेदारी

का प्रतीक मानते चीन का उदाहरण देते हुए कहा है कि चीन की सभ्यता अफीम की नशा के कारण अर्ध बेहोश पड़ी है । अर्थात नशीली दवाये अथवा शराब व्यक्ति विशेष के लिए हानिकारक तो हैं ही साथ में राष्ट्र के लिए भी हानिकारक है।

युद्धों महायुद्धों और विभाजन के दौरान नारियों का शोषण बहुत मात्रा में हुआ। आर्यों के कालखंड़ में तो नारी को शुद्र श्रेणी में गिनाया गया। इसी कारण नारी को पुरूषों की दासी मानी गयी। पुरूष प्रधान संस्कृति के कारण 'भोग-वस्तु' बनी नारी को युद्धों के दौरान सामुहिक बलात्कार का शिकार बनना पडा। तो कभी उसकी सुंदरता ने (अहिल्या) उसे पाषाण की मुर्ति बना दिया। अर्थात परित्यक्ता जीवन बीताने के लिए उसे मजबुर किया गया है। समाज में प्रचलित रूढ़ि पंरपरा के अनुसार बाल विवाह की प्रथा पहले रूढ़ थी। इसीकारण अनमेल विवाह हुए। जिसके साथ बहु विवाह प्रथा भी चल रही थी। समाज में विधवाओं की स्थिति दयनिय थी। धर्मांध लोग नारी को अपनी हवस का शिकार बना रहे थे। ऐसी औरतों की जिंदगी जीते-जी मुर्दा बन जाती थी।

यह कहा जा सकता है कि औरतों को दबाकर रखने की आदत प्राय: सभी देशों में एक जैसी, पाई जाती है वह चाहे जपान हो या कोरिया। भारत भी औरतों को गुलामी में रखने में पहले से प्रसिद्ध है। मनु, गौतम आदि ऋषियों ने नारी जीवन का स्वभाव और स्वरूप भली भाँति समझकर उनके हित और रक्षा लिए उनको सदा-सर्वदा पुरूषों के शासन में ही रहने की आज्ञा दी है। मुस्लिमों की भोगवादी वृत्ति के कारण उनमें पर्दा प्रथा अस्तित्व में आ गयी।

राजनीतिक समस्या के अतंर्गत कमलेश्वर ने आतंकवाद, स्वार्थवृत्ति, अलगाववाद गलत नेतृत्व, भ्रामक प्रचार, विभाजन शरणार्थी, रियासतें, गृहयुद्ध, उत्तराधिकार आदि समस्याओंका चित्रण किया है। कमलेश्वर ने 'विभाजन की समस्या' को महत्त्व पूर्ण माना है। इसी समस्या के चारो-ओर अन्य समस्याएँ घूमती है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास कथा का मूल स्त्रोत विभाजन ही है। जिसके लिए भारत की पूर्व स्थिति, जिसके अंतर्गत जहाँगीर के कालखंड़ से लेकर औरंगजेब का कालखंड़ आता है, इनकी जानकारी कमलेश्वर ने दी है। साथ में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना स्वार्थ प्रेरित राजा

महाराजाओं द्वारा गद्दारी का भी चित्रण किया है । गृहयुद्ध तथा उत्तराधिकार इन दो समस्याओं के अतंर्गत स्वार्थ से प्रेरित औरंगजेब का चित्रण किया है दुनियामें बनते 'पाकिस्तानों' पर प्रकाश डालते हुए लोगों के दिलो दिमाग में स्थित अलगाववादी भावना को रेखांकित किया है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि लोगों के दिलो दिमाग में पलित अलगाववादी भावना के कारण दुनिया का जितना बँटवारा होना था, हो गया। अब तो इस बँटवारे को रोको, बंद करो।

विभाजन खत्म हो जायेगा तो अपने -आप, घुसपैठ, आतंकवाद का नामो निशान मिट जायेगा। आज विश्व में आतंकवाद का बोलबाला है। आतंकवाद मिट जायेगा तो विश्व में शांति बंधुता आदि महान तत्त्वों का प्रचार और प्रसार होगा। जिसकी आज विश्व को जरूरत है । 'आर्थिक समस्या' के अतंर्गत कमलेश्वर ने उच्च वर्ग निम्न वर्ग, मध्यवर्ग, आदि के साथ ब्रिटिश पूर्व भारत, ब्रिटिशों की व्यापार नीति, धन की अतिरिक्त लालसा गुलामों का व्यापार, जमीन की पैदावारता, गरीबी, भिखमंगे, आर्थिक विषमता आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है । कंपनी राज्य स्थापणा से पूर्व भारत आर्थिक दृष्टिसे बहुत समृद्ध था। लेकिन जैसे ही कंपनी राज्य की स्थापणा हुई ब्रिटिशों ने ऐसी आर्थिक नीति अपनाई जिसके कारण भारतीय उद्योग धंधे नष्ट होने लगे। ब्रिटिशों की व्यापार नीति एक चली हुई चाल ही थी। धन की अतिरिक्त लालसा के कारण ब्रिटिश लोग नीग्रो लोगों को गुलामों के रूप में बेचते थे।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि अंग्रेज यहाँ केवल शोषण का दुश्चक्र फैलाने के लिए आये थे उन्होंने इस देश को कभी अपना देश नहीं माना । बल्कि जितना हो सके देश को लुटना ही उनका मकसद था। अंग्रेजों के साथ महाजन, सामंत समाज के मालिक बन बैठे थे। विभाजन के दौरान भारत का औद्योगिक आधार दुर्बल था। चारो ओर गरीबी और अभाव का बोलबाला था। देश के विभाजन ने लाखों लोगों को बेघरबार कर दिया था और आर्थिक जीवन विश्रृंखल हो गया था। अधिक उपजाऊ और सिंचित भाग तथा औद्योगिक और कच्चे माल के उत्पादक प्रदेश पाकिस्तान में चले

गए थे। जिससे आर्थिक दशा और भी कमजोर हो गयी। देश में बढ़ती गरीबी और बेकारी पर प्रकाश डालते हुए पितामह दादाभाई नौरोजी कहते है कि "आर्थिक साधनों के निर्गमन के कारण भारत में पूँजी का संचय नहीं हो पाता और देश की दरिद्रता बढ़ती जा रही है। भारत इसलिए गरीब हो रहा है कि प्रतिवर्ष तीन-चार करोड पौण्ड की संख्या में उसका रक्त चूसा जा रहा है।"

धार्मिक समस्या का कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित करते हुए जाति तथा वर्गभेद, ब्राह्मणवाद, ईसाई धर्म प्रचार, धार्मिक कठोरता, धर्मातंरण, रूढ़ि तथा परंपरा आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

आर्यों के आगमन के साथ ही हिंदुस्तान में धार्मिक समस्याओं की शुरूआत हुई। आर्यो ने समाज को चार वर्गों में बाँट दिया। उनमें ब्राह्मण श्रेष्ठ रहे। क्योंकि वे ब्रह्मा के मुख से पैदा होने के सिद्धांत को मानते थे। तथा यही बात उन्होने समाज में प्रचलित की थी, साथ में वेद पढ़ना यज्ञ करना आदि महत्त्वपूर्ण कार्यो को करने का अधिकार उन्हें था। यदि शुद्र ऐसा कार्य करेगा तो वह दंड के लिए पात्र था जैसे कि शुद्र वंशी ऋषि शंबुक ने मोक्ष प्राप्ति के लिए तप किये तो ब्राह्मण धर्म की रक्षा के लिए राम ने उसकी गर्दन काट डाली। महाभारत के युद्ध में हर दिन अधर्म का सहारा लिया गया।

धर्म अधर्म की बाते सिर्फ हिंदू संस्कृति में ही नहीं चलती बल्कि हर संस्कृति मे इसका बोलबाला है। कमलेश्वर ने अजटेक सभ्यता का उदाहरण दिया है कि ये लोग देवत्ताओं को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि देते है। देवताओंके सामने पशुबलि देना धर्म नहीं अधर्म हैं। इसीकारण बहुत से पशुओं की जातियाँ नामशेष हो रही हैं। देवताओं के नामपर चढाया हुआ भोग पुजारियों के पेट में जा रहा था।

नेताओं की धार्मिक कठोरता के कारण लोगों के दिलो दिमाग मे अलगावावादी भावना का प्रचूर मात्रा में उद्भव हुआ। और वे अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म बनाने के लिए भरसक प्रयास करने लगे। औरंगजेब के कलाखंड़ में तो उसने इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध करने तथा हिंदुओं को कुचलने में अपनी सारी शक्ति लगा दी। उसने धार्मिक

सेंसर लगाया। धर्मातरण को बढ़ावा दिया। स्वेच्छा से नहीं तो तलवार के बल पर धर्मांतरण करने के लिए सत्रहवी सदी जानी जाती हैं।

साहित्यिक समस्या के अंतर्गत कमलेश्वर ने राजाश्रित इतिहासकारों पर प्रकाश डाला है। जो अपने स्वार्थ के खातिर सच्चाई का गला घोंटकर झूठ का दामन पकड़ते थे। ऐसे इतिहासकार जो न लिखने के लिए स्वतंत्र थे और न ही सोच विचार करने के लिए। इन पर प्रहार करते हुए कमलेश्वर ने झूठ का पर्दा पाश करते हुए सच्चाई पर प्रकाश डाला है। सत्रहवी सदी के बहुत से इतिहासकार राजाश्रित थे। उन्होने लिखा हुआ इतिहास बादशाह की मर्जी उसका गौरवगान, और (संदिग्ध) विरत्व आदि घटनों पर प्रकाश डालता है। औरंगजेब को निर्दोष साबित करने के लिए इन इतिहासकारों ने मनगढंत कहानियाँ बनायी।

अंग्रेजी इतिहासकारों ने तो अपने स्वार्थ के लिए और साम्राज्यवाद के खातिर हिंदुस्तान में हिंदू-मुस्लिमों में अलगाववाद का बीज बोया। बाबरी मस्जिद और राम जन्मभूमी मंदिर आदि झगडो को उठाया। अपने झूठे इतिहासों में उन्होने बाबर द्वारा राममंदिर तोड़ने का जिक्र किया साथ ही साथ हिंदुओं के खून से बाबरी मस्जिद के लिए गारा बनवाया आदि घटनाएँ ये साबित करती है कि अंग्रेज लेखक कितने चालाख थे।

निष्कर्षत: यह कह जा सकता है कि 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने साहित्यिक समस्या के अंतर्गत राजाश्रित इतिहासकारों का पर्दाफाश किया है। झूठ को दफनाकर सच्चाई उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया है। साहित्यिक कर्म को नजर अंदाज करके ये इतिहासकार (साहित्यिक)धातु और चंद सिक्कों के पिछे लगे हुए थे। साहित्यिक विद्वानों के द्वारा लिखा हुआ साहित्य समाज का पथ प्रदर्शन के बजाय आपसी मतभेद ही बढ़ा सकता है। अर्थात कमलेश्वर आने वाले साहित्यकारों का पथ प्रदर्शन सही दिशा में करना चाहते है।

वैज्ञानिक समस्या के अतंर्गत कमलेश्वर ने अणुयुग की शुरूआत और उसके नतीजे पाठको के सामने रखने का प्रयास किया है। एक ओर विज्ञान मानव जीवन के

लिए वरदार साबित हो रहा है। तो दूसरी ओर विज्ञान महाभयानक शाप। कमलेश्वर ने विज्ञान के इस शापित रूप को 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास अतंर्गत चित्रित किया है।

रूदर फोर्ड ने पदार्थ के गर्भ में स्थित अणु और उसका केंद्रक न्यूक्लियस का संशोधन किया जो कि विज्ञान का एक अविष्कार था। किन्तु दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इसी अणु का प्रयोग मानव विनाश के लिए किया गया। अमरिका जैसे बलाढ्य राष्ट्र ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर अणुबमों का वर्षाव किया। जिसके परिणाम आज तक जापान के लोग भुगत रहे हैं।

यह सच है कि युद्ध का जुनून कुछ भी करवा सकता है इसीलिए ही तो हिरोशिमा और नागासाकी घनदाट बस्ती, शस्त्रास्त्रों के कारखाने एक साथ समाप्त करने की कुचाल अमरिका ने चली और सफल भी हुए। हिरोशिमा और नागासाकी रेगिस्तान की तरह क्षार-क्षार हो गयी। बाल-बच्चे अपाहिज लुले, लंगडे, अंधे हो गए। प्राकृतिक वातावरण विषैला हो गया।

आज भारत और पाकिस्तान ये दोनो देश भी अपने-अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन कर रहे है। दोनों देशों ने थी अणु परिक्षण लिए है। इन परिक्षणों के कारण विषैली हवा बह रही हैं।

अत:मे कमलेश्वर जी इतना ही कहना चाहते हैं कि अगर इसी तरह अणु परीक्षण होते रहेंगे तो जल्दी हो तीसरा विश्व युद्ध आवश्य होगा। इसीलिए वे ऐसे परिक्षणों के खिलाफ है। वे मानवतावाद शांति और भाईचारे की जिदंगी यापन करने के पक्ष में हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृ.9
2. वही, पृ.90
3. (सं.) नगेंद्रनाथ वस्तु- हिंदी विश्वकोश,पृ. 598
4. (सं.) राजा राधाकांतदेव- शब्दकल्पद्रुम, पृ.300
5. (सं.) रामचंद्र वर्मा -मानक हिंदी कोश,पृ. 283
6. डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य,पृ.81/82
7. कमलेश्वर -कितने पाकिस्तान, पृ.293
8. वही, पृ. 293/294
9. वही, पृ.291
10. वही, पृ. 340
11. वही, पृ.315
12. वही, पृ. 20/21
13. वही, पृ.120
14. वही, पृ.120
15. वही, पृ.354
16. वही, पृ.355
17. वही, पृ.219
18. वही,पृ. 89
19. डॉ. कृष्णकुमार बिस्सा - चंन्द्रा, (साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में 'राजनैतिक चेतना' प्रस्तावना से) पृ. 89

20. डॉ. एम.एम.लवानिया, शशी के. जैन-भारत मे सामाजिक समस्याएँ, पृ.332

21. कमलेश्वर-कितने पाकिस्तान, पृ.59

22. वही,पृ.57

23. वही,पृ.57

24. वही,पृ.317

25. वही,पृ.330

26. वही, पृ.57

27. वही, पृ.322

28. वही, पृ. 306

29. डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ. राजशेखर व्यास - भारतीय इतिहास की मूलधाराएँ - भाग2 पृ.70

30. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश-भाग 1, पृ. 449

31. डॉ. एस.एल.नागोरी, जितेश नागोरी - आधुनिक भारत का सामा.आर्थिक एवं राजनैं. इतिहास, पृ. 62

32. वही, पृ. 62

33. कमलेश्वर -कितने पाकिस्तान, पृ. 229

34. वही, पृ. 298

35. वही, पृ.51

36. वही, पृ. 282

37. वही, पृ.

38. वही, पृ.149

39. वही, पृ. 282/83

40. वही, पृ. 283

41. रामधारि सिंह 'दिनकर'- संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 611

42. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान, पृ. 86

43. वही, पृ. 86

44. वही, पृ. 104

45. वही, पृ.156

46. डॉ. शिवभानुसिंह -धर्म दर्शन का अचोलनात्मक अध्ययन, पृ. 225/26

47. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान, पृ. 332

48. वही, पृ. 152

49. वही, पृ.302

50. वही, पृ.163

51. वही, पृ. 264

52. वही, पृ. 133

53. वही, पृ. 74

54. डॉ. कालूराम शर्मा, डॉ.राजशेखर व्यास- भारतीय इतिहास की मूलधाराएँ भाग- 2, पृ. 12/13

55. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान,पृ. 343

56. वही, पृ. 343

57. वही, पृ. 344

58 वही, पृ. 345

59. कमलेश्वर - कितने पाकिस्तान, पृ. 346

60. वही, पृ.349

*****